राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, सोमवार, 20 अप्रैल 2026
वर्ष 14, अंक 359, पृष्ठ 04, मूल्यः 01 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

सिकंदराबाद में नाली निर्माण की बजाय पाइपलाइन डालने से जलभराव...03

गोंडा में हैंडपंप करोड़ों का घोटालाः 16 ब्लॉकों की 1214 ग्राम पंचायतो....4

26 साल पुराने केस में CBI के जॉइंट डायरेक्टर दोषी करार, तीस हजारी कोर्ट का बड़ा फैसला

● तीस हजारी कोर्ट ने साल 2000 में आईआरएस अधिकारी के घर पर दुर्भावनापूर्ण ढंग से छापेमारी के लिए सीबीआई के दो वरिष्ठ अधिकारियों को दोषी ठहराया

●कोर्ट ने कहा कि अधिकारी की गिरफ्तारी सीएटी के आदेश को रद्द करने के लिए एक सुनियोजित साजिश थी

दिल्ली की एक अदालत ने दो दशक से अधिक समय पहले एक छापेमारी के दौरान भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के एक अधिकारी के आवास में जबरन घुसने और उनके साथ मारपीट करने के मामले में दो सीबीअई अधिकारियों को दोषी ठहराया है. न्यायिक मजिस्ट्रेट शशांक नंदन भट्ट ने सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी वीके पांडे और रमनीश के खिलाफ मामले की सुनवाई की। 1994 बैंच के CBI अधिकारी रामनीश गीर को राष्ट्रपति ने पुलिस मेडल पदक से सम्मानित किया था. रमनीश मौजूदा समय में गुवाहाटी में CBI के जॉइंट डायरेक्टर के पद पर तैनात है. साल 2000 में जब यह छापेमारी हुई थी तब रमनीश पुलिस अधीक्षक (एसपी) के पद पर तैनात थे।

सीबीआई के दो अधिकारी दोषी

कोर्ट ने 17 अप्रैल के अपने आदेश में कहा कि 19 अक्टूबर 2000 को आरोपियों द्वारा ली गई तलाशी और गिरफ्तारी की पूरी कार्यवाही कानून द्वारा उन्हें दी गई शक्तियों का उल्लंघन थी. उन्होंने कहा कि उस कार्रवाई का एकमात्र उद्देश्य केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण के उस आदेश को निष्प्रभावी करना था, जिसमें शिकायतकर्ता आईआरएस अधिकारी अशोक कुमार अग्रवाल के निलंबन की समीक्षा का निर्देश दिया गया था. अदालत ने दोनों अधिकारियों को दोषी ठहराते हुए सजा सुनाने के लिए मामले को अगली कार्यवाही के लिए सूचीबद्ध किया है।

बता दें कि तीस हजारी कोर्ट ने साल 2000 में आईआरएस अधिकारी के घर पर दुर्भावनापूर्ण ढंग से छापेमारी के लिए सीबीआई के दो वरिष्ठ अधिकारियों को दोषी ठहराया. कोर्ट ने कहा कि अधिकारी की गिरफ्तारी सीएटी के आदेश को रद्द करने के लिए एक सुनियोजित साजिश थी।

इन धाराओं में दर्ज हुआ था मुकदमा

शनिवार के एक ऐतिहासिक फैसले में, रामनीश जो वर्तमान में सीबीआई के संयुक्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं (जो वर्ष 2000 में सीबीआई के एसआईयू-8 में पुलिस उप अधीक्षक के पद पर तैनात थे), और वीके पांडे, दिल्ली के सेवानिवृत्त सहायक पुलिस आयुक्त (उस समय सीबीआई के एसआईयू-9 में इंस्पेक्टर) को चोट पहुंचाने, उपद्रव करने, आपराधिक अतिक्रमण करने और सामान्य इरादे से किए गए कृत्यों के लिए दोषी ठहराया गया है। शिकायतकर्ता अशोक कुमार अग्रवाल हैं, जो 1985 बैच के आईआरएस अधिकारी हैं और उस समय दिल्ली जोन में प्रवर्तन उप निदेशक के पद पर कार्यरत थे. उन्हें सीबीआई के दोनों मामलों में बरी कर दिया गया था।

तमिलनाडुः विरुधुनगर की पटाखा फैक्ट्री में भीषण धमाका,19 लोगों की मौत, कई घायल

● तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले में पटाखा फैक्ट्री में हुए ब्लास्ट से 19 लोगों की मौत हो गई. घटना से इलाके अफरा-तफरी जैसा माहौल है. सूचना मिलते ही रेस्क्यू टीमें मौके पर पहुंच गई हैं

तमिलनाडु के विरुधुनगर जिले में पटाखा फैक्ट्री में भीषण धमाके हुआ है. फैक्ट्री में काम करने वाले 19 मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई है. कई घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है. पुलिस और फायर बिग्रेड की टीमें राहत-बचाव में काम में जुटी हुई है। जानकारी के अनुसार, विरुधुनगर जिले में कई पटाखा कारखाने चल रहे हैं. इन कारखानों में पुरुष और महिलाएं मजदूर के रूप में काम करते हैं. पटाखा उद्योग ही उनकी आजीविका है. ऐसे ही एक पटाखा फैक्ट्री विरुधुनगर के पास कट्टनरपत्ती चल रही थी. आसपास के इलाकों के कई पुरुष और महिलाएं इस कारखाने में काम करते थे. रविवार सुबह भी वह हमेशा की तरह काम पर आए थे. वह फैक्ट्री में अलग-अलग काम कर रहे थे, तभी अचानक अंदर एक हिस्से में ब्लास्ट हो गया. ब्लास्ट से पलक झपकते ही 4 इमारतें ढह गई।

ब्लास्ट के बाद अंदर फंसे मजदूर

इस हादसे में पटाखा फैक्ट्री के अंदर 20 से अधिक मजदूर फंस गए. इस दुर्घटना के कारण पूरा इलाका काले धुएं से ढक गया. आसपास मौजूद लोगों ने यह देखकर दमकल स्टेशन और पुलिस को सूचना दी. इसके बाद दमकलकर्मी और पुलिस मौके पर पहुंचे और आग बुझाने का काम शुरू किया. आग पर आंशिक रूप से काबू पा लिया गया. बाद में पुलिस और दमकल कर्मियों ने इमारत के अंदर फंसे मजदूरों को बचाने का प्रयास किया।

19 लोगों की मौत

इस दौरान 19 लोगों की मौके ही जिंदा जलकर मौत हो गई, जबकि 5 से ज्यादा मजदूरों को गंभीर रूप से घायल अवस्था में एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उनकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है. इस वजह से आशंका है कि मृतकों की संख्या और बढ़ सकती है. सभी 19 शवों को पुलिस ने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोचर्री में भिजवा दिया है. पुलिस ने मामला दर्ज कर घटना की जांच शुरू कर दी है।

हादसे पर CM एमके स्टालिन ने जताया दुख

पुलिस निजी पटाखा फैक्ट्री के मालिक और प्रबंधक से भी पूछताछ कर रही है. फैक्ट्री में अचानक हुए ब्लास्ट से इलाके में सनसनी और मातम का माहौल है. बता दें कि कुछ दिनों पहले भी इसी इलाके में ब्लास्ट की एक घटना सामने आई थी. इस हादसे पर तमिलानडु के मुख्यमंत्री एमके स्टलिन ने दुख जातया है. उन्होंने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा कि 'विरुधुनगर जिले के कट्टानापट्टी में एक पटाखा फैक्ट्री में हुए धमाके में कई लोगों की मौत की दुखद खबर से मुझे गहरा दुख हुआ है'। आगे वह लिखते हैं कि जिन लोगों ने अपनी जान गंवाई, उनके परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं. मैंने माननीय मंत्रियों के.के.एस.एस.आर. रामचंद्रन और थंगम तेन्नारासु से अनुरोध किया है कि वे तुरंत घटनास्थल पर पहुंचें, बचाव कार्यों में तेज़ी लाएं और उनकी निगरानी करें, तथा प्रभावित परिवारों को सांत्वना दें. पटाखा फैक्ट्री ब्लास्ट में हुई मौतों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दुख जाहिर किया है।

संक्षिप्त ख़बरें

नैनी में आवारा कुत्ते का आतंकः अधेड़ पर हमला, हालत गंभीर

नैनी, प्रयागराज। नैनी क्षेत्र में आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है। शुक्रवार शाम एफसीआई के समीप एक अधेड़ व्यक्ति पर आवारा कुत्ते ने हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया।मिली जानकारी के अनुसार, एफसीआई निवासी कृष्णा सिंह रोज की तरह अपने घर के आसपास टहल रहे थे। इसी दौरान अचानक एक आवारा कुत्ते ने उन पर हमला कर दिया और उन्हें बुरी तरह काट लिया। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने तत्परता दिखाते हुए उन्हें तत्काल सीएचसी चाका पहुंचाया,जहां प्राथमिक उपचार के बाद डॉक्टरों ने उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें कॉल्विन अस्पताल रेफर कर दिया।स्थानीय लोगों का कहना है कि क्षेत्र में आवारा कुत्तों का आतंक बढ़ता जा रहा है और आए दिन लोग इनके हमलों का शिकार हो रहे हैं। बावजूद इसके नगर निगम की ओर से कुत्तों को पकड़ने या नियंत्रण के लिए कोई प्रभावी अभियान नहीं चलाया जा रहा है।लोगों ने नगर निगम से मांग की है कि जल्द से जल्द आवारा कुत्तों पर नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठाए जाएं, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके।

दिल्ली में PNB के ड्रॉप बॉक्स से गायब हो गया 5 लाख का चेक, कैश भी हो गया; बिल्डर ने दर्ज कराई एफआईआर

पूर्वी दिल्ली। प्रीत विहार इलाके में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक बिल्डर की ओर से बैंक के ड्रॉप बॉक्स में डाला गया पांच लाख रुपये का चेक गायब हो गया और बाद में किसी और ने चेक को कैश करा लिया गया। इस मामले में बैंक स्टाफ के शामिल होने का शक जताया जा रहा है। गगन विहार निवासी बिल्डर संजय बंसल के अनुसार, उनका सेविंग खाता Punjab National Bank (PNB), प्रीत विहार में है। उन्होंने गत नौ अप्रैल को अपने कर्मचारी दीपक शर्मा को इंडियन बैंक की कश्मीरी गेट शाखा का account payee चेक दिया था, जिसे PNB की प्रीत विहार शाखा के ड्रॉप बॉक्स में डाला था। इसके बावजूद रकम उनके खाते में नहीं आई। जब उन्होंने बैंक से संपर्क किया तो पता चला कि संबंधित चेक बैंक रिकॉर्ड में ही नहीं है। आगे जानकारी जुटाने पर सामने आया कि उक्त चेक को 13 अप्रैल 2026 को इंडियन बैंक की कश्मीरी गेट शाखा से कैश करा लिया गया।

मुख्यमंत्री योगी के निर्देश पर प्रदेश के सभी स्मार्ट बिजली मीटर उपभोक्ताओं को बड़ी राहत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विद्युत उपभोक्ताओं की सुविधा और उनकी समस्याओं के त्वरित समाधान को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में ऊर्जा विभाग सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। स्मार्ट मीटर से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन युद्धस्तर पर प्रयास कर रहा है। ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा ने बताया कि स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं के लिए यह व्यवस्था लागू की गई है कि जीरो बैलेंस होने की स्थिति में भी अधिकतम 3 दिन या 200 रुपये तक (2 किलोवाट भार तक) विद्युत आपूर्ति बाधित नहीं होगी, जिससे उपभोक्ताओं को राहत मिल सके। बिजली विभाग की समीक्षा बैठक में विद्युत व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, उपभोक्ता हितैषी और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये।

45 दिन तक बिजली कनेक्शन नहीं काटा जाएगा

ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा ने उपभोक्ताओं को राहत देते हुए कहा कि जहां स्मार्ट मीटर अभी हाल में लगे हैं, वहां लगभग 15 दिन की कन्वर्जन अवधि और उसके बाद 30 दिन यानी कुल 45 दिन तक किसी भी उपभोक्ता का बिजली कनेक्शन नहीं काटा जाएगा।

रिपोर्ट आने तक पुराने मीटर बदलने की प्रक्रिया पर रोक

ऊर्जा मंत्री ने विशेष रूप से स्मार्ट मीटर व्यवस्था की समीक्षा में निर्देश देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री जी के निर्देश पर गठित तकनीकी समिति जब तक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं कर देती और उसकी जांच नहीं हो जाती, तब तक पुराने मीटरों को स्मार्ट मीटर में बदलने की प्रक्रिया पर तत्काल प्रभाव से रोक रहेगी। उपभोक्ताओं को समय पर जानकारी उपलब्ध कराने के लिए 5-स्तरीय एसएमएस अलर्ट प्रणाली लागू की जाएगी, जिसके तहत बैलेंस 30 प्रतिशत होने पर पहला, 10 प्रतिशत पर दूसरा, बैलेंस समाप्त होने पर तीसरा, डिस्कनेक्शन से एक दिन पूर्व चौथा और डिस्कनेक्शन के बाद पांचवां संदेश भेजा जाएगा।

बैलेंस नेगेटिव होने पर भी नहीं काटा जाएगा कनेक्शन

ऊर्जा मंत्री ने निर्देश दिए कि रविवार और अन्य अवकाश के दिनों में बैलेंस नेगेटिव होने पर भी किसी भी स्थिति में बिजली कनेक्शन नहीं काटा जाएगा, जिससे उपभोक्ताओं को

अनावश्यक परेशानी से बचाया जा सके।

स्मार्ट मीटर की तकनीकी गुणवत्ता की जांच

ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव एवं यूपी पावर कॉरपोरेशन के अध्यक्ष डॉ. आशीष कुमार गोयल ने मुख्यमंत्री के निर्देश पर स्मार्ट मीटर की तकनीकी गुणवत्ता की जांच के लिए चार सदस्यीय उच्चस्तरीय समिति गठित की है। इसमें इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) कानपुर के प्रोफेसर अंकुश शर्मा, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) कानपुर के ही प्रोफेसर प्रबोध बाजपेयी, इलेक्ट्रिकल रिसर्च एवं डेवलपमेंट एसोसिएशन वडोदरा के अनुभाग प्रमुख तेजस मिस्त्री और यूपी पावर कारपोरेशन लि. के निदेशक (वितरण) जीडी द्विवेदी को शामिल किया गया है। समिति 10 दिनों में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी।

स्थलीय निरीक्षण करके निस्तारित करे, शिकायतों के निस्तारण में किसी तरह की लापरवाही सामने आने पर संबंधित के विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी

बस्ती। बस्ती जिले मेंशासन के निर्देशानुसार तहसील के अंदर स्थलीय निरीक्षण करके निस्तारित करे,शिकायतों के निस्तारण में किसी तरह की लापरवाही सामने आने पर संबंधित के विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। आज जिलाधिकारी कृत्तिका ज्योत्स्न की अध्यक्षता में सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसील रूधौली में सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण समाधान दिवस में जिलाधिकारी ने विभिन्न विभागों से जुड़ी शिकायतों को एक-एक कर सुनते हुए मौके पर उपस्थित सम्बंधित विभागीय अधिकारियों को जनशिकायतों को निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत निस्तारण के लिए निर्देशित किया। उन्होने कहा कि शिक़ायतकर्ताओं की समस्याओं को गंभीरता से सुने और स्थलीय मौका देखकर गुणवत्तापूर्ण व ससमय समस्याओं का निस्तारण करें। उप जिलाधिकारी मनोज प्रकाश ने बताया कि सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 64 मामलें प्राप्त हुए, जिसमें से 07 का मौके पर निस्तारण किया गया। इसमें राजस्व विभाग 32, पुलिस 09, विकास 04, विद्युत 08, पूर्ति विभाग 09, उप निबंधक व नहर के 1-1 मामलें आये।

कृष्ण और सुदामा की मित्रता अनुपम उदाहरण है जिससे सबक लेना चाहिए

●थानापुर में भागवत सप्ताह संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। थानापुर में चल रहे भागवत सप्ताह के अंतिम दिन भागवत कार आचार्य यशोदा नंदन जी ने श्री कृष्ण और सुदामा की मित्रता की अनुपम व्याख्या करते हुए बताया की राजा और रंक की मित्रता कैसी होनी चाहिए यह कृष्ण और सुदामा की मित्रता का बेमिसाल उदाहरण है मित्रता में ना कोई राजा होता है ना कोई दरिद्र। मित्रता अनमोल चीज है जिसमे असमानता गरीबी अमीरी और पद का कोई महत्व नहीं रहता।आचार्य जी ने कहा राजा द्रुपद ने राजा होने के अहंकार में द्रोणाचार्य जैसे परम बाल सखा का अपमान करके मित्रता पर कलंक लगाने का कार्य किया था जब की श्री कृष्ण ने द्वारिका के राजा होकर सुदामा के लिए जो कर दिखाया वह आज तक बेमिसाल है।क्योंकि कृष्ण में राजा का अहंकार नहीं आया था और सुदामा को वहीं

बाल सखा वाला ही मित्र धर्म का पालन करते हुए उनके दरिद्रता का एहसास नहीं होने दिया जब की द्रुपद को राजा का अहंकार हो गया और मित्र धर्म का मजाक उड़ाते हुए द्रोणाचार्य को राजसभा से अपमानित करके भगा दिए थे ।जिसका परिणाम द्रुपद को बंधक बन कर द्रोणाचार्य के कदमों में क्षमा मांगना पड़ा था। आचार्य ने भागवत सप्ताह के अंतिम दिन भागवत में वर्णित अनेक उदाहरण देकर भक्त गणों को जानकारी दी।भागवत यह सीख देती है कि जीवन का सार क्या है।न्याय अन्याय क्या है धर्म और अधर्म क्या है यदि मनुष्य जान ले तो कभी मनुष्य अपने जीवन में गलत कार्य नहीं कर सकता। भागवत सप्ताह के आयोजक मानिक चंद्र द्विवेदी तथा राजेन्द्र द्विवेदी द्वारा अपने पूर्वजों की स्मृति में यह आयोजन किया जो काफी सफल रहा।

स्काउट-गाइड तृतीय सोपान जांच शिविर

सिद्धार्थनगर / जिले के खुनियांव क्षेत्र स्थित कंपोजिट विद्यालय गौरडीह में भारत स्काउट और गाइड, उत्तर प्रदेश प्रादेशिक मुख्यालय महानगर लखनऊ के तात्वाधान में आयोजित तृतीय सोपान जांच शिविर का तीसरा दिन उत्साह और सीख से भरपूर रहा। यह शिविर सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त स्काउट बस्ती मंडल बस्ती राकेश कुमार सैनी एवं सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त गाइड बस्ती मंडल सुषमा यादव के मार्गदर्शन में आयोजित किया जा रहा है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शैलेश कुमार के आदेशानुसार,जिला स्काउट मास्टर महेश कुमार एवं जिला गाइड कैप्टन अर्चना वर्मा के कुशल संचालन में किया जा रहा है। खंड शिक्षा अधिकारी खुनियांव महेंद्र कुमार के दिशा- निर्देश में शिविर की गतिविधियाँ सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं। हेमंत गुप्ता द्वारा बताए गए।पाक विद्या का प्रशिक्षण डॉ. इफ्तेखारूननिसा ने प्रदान किया।प्रशिक्षण के उपरांत प्रतिभागियों की लिखित परीक्षा भी आयोजित की गई, जिससे उनके ज्ञान का आकलन किया जा सके।विद्यार्थियों में अनुशासन, आत्मनिर्भरता और नेतृत्व क्षमता विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हो रहा है।

अमेरिका में दिल दहला देने वाली घटनाः लुइसियाना में मास शूटिंग, 8 बच्चों की मौत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

अमेरिका के लुइसियाना राज्य में एक बेहद दर्दनाक और चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहां हुई एक मास शूटिंग में 1 से 14 साल की उम्र के 8 बच्चों की मौत हो गई। इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है।

कैसे हुआ हादसा?

रिपोर्ट्स के मुताबिक, यह गोलीबारी एक रिहायशी इलाके में हुई, जहां अचानक फायरिंग शुरू हो गई। गोलियों की आवाज से इलाके में अफरा-तफरी मच गई और लोग जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे।

मासूमों की गई जान

इस हमले में जिन बच्चों की जान गई, उनकी उम्र बेहद कम थी। सबसे छोटा बच्चा सिर्फ 1 साल का था। बाकी बच्चों की उम्र 14 साल तक बताई गई है। इस वजह से घटना को और भी ज्यादा दिल दहला देने वाली मानी जा रही है।

जांच में जुटी पुलिस

घटना के बाद पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां मौके पर पहुंचीं और इलाके को घेर लिया गया। हमलावर की तलाश जारी है। गोलीबारी के पीछे की वजह का पता लगाया जा रहा है।

अमेरिका में बढ़ते गन वायलेंस पर सवाल

इस घटना के बाद एक बार फिर अमेरिका में गन कंट्रोल कानूनों को लेकर बहस तेज हो गई है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, जिससे बच्चों और आम नागरिकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।

स्थानीय प्रशासन की प्रतिक्रिया

स्थानीय अधिकारियों ने इस घटना पर गहरा दुख जताया है और पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की है। साथ ही उन्होंने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का भरोसा दिया है।

महिला आरक्षण से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में गिरा, विरोध में 230 सांसदों ने किया वोट

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण 2029 के लोकसभा चुनाव से लागू करने से संबंधित संविधान संशोधन विधेयक शुक्रवार को संसद के निचले सदन में पारित नहीं हो पाया। सदन में 'संविधान (131वां) संशोधन विधेयक 2026', पर हुए मत विभाजन के दौरान इसके पक्ष में 298 और विरोध में 230 वोट पड़े। मतदान के समय सदन में कुल 528 सांसद मौजूद थे। विधेयक को पारित कराने के लिए सरकार को दो तिहाई बहुमत की जरूरत थी। वहीं राहुल गांधी ने कहा कि यह संविधान पर आक्रमण था और इसे हमने हरा दिया है तो यह अच्छी बात है।

लोकसभा में किसी भी संविधान संशोधन विधेयक को पारित करने के लिए दो तिहाई बहुमत की जरूरत होती है। सरकार ने इस विधेयक के साथ 'परिसीमन विधेयक, 2026' और 'संघ राज्य विधि (संशोधन) विधेयक, 2026' को भी सदन में चर्चा और पारित कराने के लिए रखा था, लेकिन उन्हें भी आगे नहीं बढ़ाया जा सका। महिला आरक्षण संशोधन विधेयक पर वोटिंग के बाद लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने कहा, 'संविधान संशोधन(131वां संशोधन) बिल पास नहीं हुआ, सदन में वोटिंग के दौरान इसे 2/3 बहुमत नहीं मिला।'

संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि संविधान संशोधन विधेयक के पारित नहीं होने के बाद अब इससे संबंधित दोनों विधेयकों 'परिसीमन विधेयक, 2026' और 'संघ राज्य विधि (संशोधन) विधेयक, 2026' को आगे नहीं बढ़ा सकते। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा, 'यह संविधान पर आक्रमण था और इसे हमने हरा दिया है तो यह अच्छी बात है। हमने स्पष्ट रूप से कहा है कि यह महिला बिल नहीं है, यह हिंदूस्तान का जो राजनीतिक ढांचा है, चुनावी ढांचा है, उसे बदलने की कोशिश है। यह हमने रोक दिया है।

मैं प्रधानमंत्री से कह रहा हूं कि अगर आप महिला आरक्षण चाहते हैं तो 2023 का महिला आरक्षण बिल निकालिए, उसका क्रियान्वयन आज से करिए और पूरा विपक्ष 100% आपको समर्थन देगा और महिला आरक्षण को हम तत्काल लागू कराएंगे।' वहीं कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, 'महिला आरक्षण की बात नहीं थी ये लोकतंत्र की बात थी, देश की अखंडता की बात थी। हम कभी इससे सहमत नहीं हो सकते कि आप महिला आरक्षण को इस तरह परिसीमन से जोड़ें कि वो पुरानी जनगणना पर चले जिसमें OBC शामिल भी नहीं है। ये मुमकिन नहीं था कि ये बिल पारित हो। देश के लोकतंत्र के लिए, देश की अखंडता के लिए ये बड़ी जीत है।

अक्षय तृतीया और परशुराम अवतार का अद्भुत संगम

भारतीय सनातन संस्कृति में अवतारवाद की परंपरा केवल ईश्वरीय उपस्थिति का प्रमाण नहीं है, बल्कि यह मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना और समाज को दिशा दिखाने का एक जीवंत माध्यम भी है। भगवान विष्णु के छठे अवतार के रूप में प्रतिष्ठित भगवान परशुराम का प्राकट्य इसी श्रृंखला की एक अत्यंत तेजस्वी कड़ी है। प्रतिवर्ष वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को संपूर्ण भारतवर्ष में परशुराम जयंती अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई जाती है। ज्योतिषीय गणना और पंचांग के विश्लेषण के अनुसार, तृतीया तिथि का आगमन 19 अप्रैल 2026 को प्रातः 10:49 बजे होगा और इसका समापन अगले दिन 20 अप्रैल 2026 को प्रातः 07:27 बजे होगा। शास्त्रों में भगवान परशुराम का जन्म प्रदोष काल में माना गया है, इसलिए उदयातिथि और सायंकालीन मुहूर्त की महत्ता को देखते हुए 19 अप्रैल को ही जयंती मनाना श्रेष्ठ और शास्त्रसम्मत है। यह तिथि केवल एक जयंती मात्र नहीं है, बल्कि यह अक्षय तृतीया का भी महापर्व है, जिसका अर्थ है वह तिथि जिसका पुण्य कभी क्षय नहीं होता।

भगवान परशुराम का जन्म महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका के घर हुआ था। वे भृगु कुल के रत्न थे, इसलिए उन्हें भार्गव के नाम से भी जाना जाता है। उनका मूल नाम 'राम' था, किंतु उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें अपना अमोघ शस्त्र 'परशु' प्रदान किया, जिसके कारण वे लोक में परशुराम के नाम से विख्यात हुए। उनका व्यक्तित्व अत्यंत विलक्षण है क्योंकि वे एक ही समय में श्रेष्ठ ब्राह्मण भी हैं और अजेय योद्धा भी। सनातन धर्म में उन्हें 'ब्रह्म-क्षत्रिय' की उपाधि दी गई है, जो यह दर्शाता है कि जब शांति और शास्त्र विफल होने लगें, तब धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना अनिवार्य हो जाता है। उनके जीवन का प्रत्येक प्रसंग हमें साहस और सिद्धांतों के प्रति अडिग रहने की प्रेरणा देता है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, उस कालखंड में जब क्षत्रिय राजा अपनी शक्ति के मद में चूर होकर ऋषि-मुनियों और निर्दोष जनता पर अत्याचार करने लगे थे, तब भगवान परशुराम ने अन्याय के विरुद्ध युद्ध का शंखनाद किया। हैहय वंश के राजा कार्तवीर्य अर्जुन ने जब अपने बल के अहंकार में महर्षि जमदग्नि की कामधेनु गाय का बलपूर्वक अपहरण किया और अंततः ऋषि की हत्या कर दी, तब परशुराम ने भीषण प्रतिज्ञा ली। उन्होंने न केवल कार्तवीर्य अर्जुन का वध किया, अपितु पृथ्वी को 21 बार आततायी क्षत्रियों से विहीन कर दिया। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि उनका संघर्ष किसी जाति विशेष के विरुद्ध नहीं, बल्कि उस अधर्म और सत्ता के अहंकार के विरुद्ध था जो मानवता को पीड़ित कर रहा था। उन्होंने प्रत्येक बार विजित भूमि को ऋषियों और ब्राह्मणों को दान कर दिया, जिससे यह सिद्ध होता है कि उनके भीतर भूमि का मोह नहीं, बल्कि धर्म का राज्य स्थापित करने की ललक थी।

भगवान परशुराम के चरित्र में क्रोध और करुणा का एक अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है। त्रेता युग में जब भगवान श्रीराम ने जनकपुर में शिव का धनुष तोड़ा, तब परशुराम का आगमन और उनका क्रोध उनके शिव-भक्त होने का प्रमाण था, किंतु श्रीराम की विनम्रता और उनके ईश्वरत्व को पहचानते ही वे शांत होकर उन्हें आशीर्वाद देकर महेंद्रगिरि पर्वत पर तपस्या हेतु चले गए। इसी प्रकार द्वापर युग में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य और दानवीर कर्ण जैसे महारथियों को शस्त्र विद्या प्रदान की। महाभारत के युद्ध में उनके द्वारा दी गई शिक्षा और अस्त्रों ने निर्णायक भूमिका निभाई। वे चिरंजीवी हैं, अर्थात सात अमर विभूतियों में से एक हैं जो आज भी इस पृथ्वी पर सूक्ष्म रूप में विद्यमान हैं। ऐसी मान्यता है कि वे कलयुग के अंत में भगवान कल्कि के गुरु बनेंगे और उन्हें धर्म स्थापना के लिए शस्त्र विद्या प्रदान करेंगे।

आध्यात्मिक दृष्टि से परशुराम जयंती का महत्व अक्षय तृतीया के साथ जुड़कर और भी बढ़ जाता है। इस दिन किए जाने वाले सत्कर्मों का फल अनंत काल तक बना रहता है। वर्ष 2026 की यह तिथि 19 अप्रैल को भक्तों के लिए आत्मशुद्धि और संकल्प का दिन होगी। इस दिन भक्त प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर पवित्र नदियों में स्नान करते हैं या जल में गंगाजल मिलाकर स्नान की परंपरा निभाते हैं। पूजा के केंद्र में भगवान परशुराम की प्रतिमा या चित्र स्थापित किया जाता है। पूजन सामग्री में चंदन, अक्षत, तुलसी दल, धूप, दीप और विशेष रूप से पंचामृत का उपयोग किया जाता है। चूंकि वे शस्त्र विद्या के आदि गुरु हैं, इसलिए इस दिन अस्त्र-शस्त्रों की पूजा का भी विशेष विधान है। कई समुदायों में इस दिन शस्त्रों का प्रदर्शन और वीरतापूर्ण खेल आयोजित किए जाते हैं जो युवाओं में शौर्य की

भावना का संचार करते हैं।

इस पर्व का एक प्रमुख पक्ष दान और सेवा है। हिंदू धर्म में मान्यता है कि इस दिन किया गया दान अक्षय फल प्रदान करता है। अनाज, जल के पात्र, वस्त्र, स्वर्ण, और गौ-दान को इस दिन अत्यंत शुभ माना गया है। 19 अप्रैल 2026 को रविवार का संयोग होने के कारण सूर्य देव की आराधना के साथ परशुराम पूजन करना और भी शुभ फलदायी होगा। ब्राह्मणों को भोजन कराना और निर्धनों की सहायता करना इस उत्सव की पूर्णता मानी जाती है। धार्मिक ग्रंथों में उल्लेख है कि जो साधक इस दिन उपवास रखकर श्रद्धापूर्वक भगवान परशुराम का स्मरण करता है, उसके जीवन से भय और बाधाएं दूर हो जाती हैं। निःसंतान दंपतियों के लिए यह व्रत विशेष रूप से संतान सुख प्रदान करने वाला माना गया है।

भगवान परशुराम का जीवन आधुनिक समाज के लिए एक महान संदेश है। आज जब विश्व भर में नैतिकता और मूल्यों का पतन हो रहा है, तब परशुराम का चरित्र हमें अनुशासन की महत्ता समझाता है। उनका जीवन सिखाता है कि शक्ति का अर्थ दूसरों को दबाना नहीं, बल्कि न्याय की स्थापना करना है। उन्होंने अपने पिता की आज्ञा का पालन कर पितृभक्ति की पराकाष्ठा दिखाई और फिर अपनी तपस्या से माता को पुनर्जीवित कर मातृप्रेम का उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका क्रोध 'सात्विक क्रोध' था, जो केवल विनाश के लिए नहीं बल्कि सृजन के मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटाने के लिए था। युवाओं को उनके जीवन से यह सीखना चाहिए कि ज्ञान (शास्त्र) और सामर्थ्य (शस्त्र) दोनों का होना अनिवार्य है, क्योंकि शस्त्रविहीन ज्ञान दुर्बल होता है और ज्ञानविहीन शस्त्र विनाशकारी।

परशुराम जयंती के अवसर पर भारत के विभिन्न हिस्सों में भव्य शोभायात्राएं निकाली जाती हैं। विशेषकर उत्तर भारत, मध्य प्रदेश, राजस्थान और कोंकण क्षेत्र में इसका भारी उत्साह देखने को मिलता है। कोंकण क्षेत्र को तो परशुराम की अपनी भूमि माना जाता है, क्योंकि उन्होंने समुद्र को पीछे धकेलकर उस भूमि का निर्माण किया था। मंदिरों में भजन, कीर्तन और धार्मिक प्रवचनों का दौर चलता है। वर्ष 2026 में 19 अप्रैल को होने वाले आयोजनों में तकनीक और परंपरा का संगम भी देखा जा सकेगा, जहाँ डिजिटल माध्यमों से भगवान के संदेशों को प्रसारित किया जाएगा। वर्तमान समय में इस पर्व को पर्यावरण और जल संरक्षण से जोड़ना भी एक सराहनीय पहल है। वृक्षारोपण और जलाशयों की स्वच्छता जैसे कार्य भगवान परशुराम के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हो सकते हैं, जिन्होंने सदैव प्रकृति और ऋषि संस्कृति का संरक्षण किया।

भगवान परशुराम की कथा हमें यह भी याद दिलाती है कि समय परिवर्तनशील है। उन्होंने जिस प्रकार अहंकार का दमन किया, वह हर युग के मनुष्य के लिए चेतावनी है कि सत्ता और संपत्ति का दुरुपयोग अंततः विनाश का कारण बनता है। उनके शस्त्र 'परशु' की धार हमें अपने भीतर की बुराइयों और विकारों को काटने की प्रेरणा देती है। जब हम उनकी जयंती मनाएंगे, तो हमारा संकल्प केवल व्यक्तिगत समृद्धि तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज के निर्माण का उत्तरदायित्व भी लेना चाहिए। भगवान परशुराम केवल एक जाति या समुदाय के आराध्य नहीं हैं, वे तो संपूर्ण मानवता के कल्याण और अधर्म के नाश के लिए अवतरित हुए थे।

अंततः यह कहना उचित होगा कि परशुराम जयंती एक ऐसा प्रकाश स्तंभ है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। उनकी पूजा हमें शारीरिक रूप से सुदृढ़, मानसिक रूप से शांत और आध्यात्मिक रूप से जाग्रत बनाती है। यदि हम उनके बताए मार्ग पर चलते हुए न्याय का साथ दें और अपने कर्तव्यों का पालन करें, तो यही उनके प्रति सच्ची भक्ति होगी। इस पावन अवसर पर किया गया जप, तप और दान हमारे जीवन में सुख-शांति का संचार करेगा और भगवान परशुराम की कृपा से समाज में धर्म की विजय होगी। यह पर्व हमें निरंतर याद दिलाता रहेगा कि जब-जब संसार में अधर्म बढ़ेगा, ईश्वरीय शक्ति किसी न किसी रूप में अन्याय का अंत करने अवश्य आएगी। भगवान परशुराम की यह जयंती हमें साहस और शांति के इसी सनातन सत्य की ओर पुनः अग्रसर करेगी।

महेन्द्र तिवारी

लोकसभा का गणित, विपक्ष की गलतफहमी और भाजपा की दूरदर्शी चाल: एक 'हार' में छिपी बड़ी जीत की कहानी

लोकसभा में सीटें बढ़ाने, परिसीमन लागू करने और महिला आरक्षण को प्रभावी बनाने से जुड़े विधेयकों का गिरना पहली नजर में भले ही नरेंद्र मोदी सरकार के लिए एक झटका दिखाई देता हो, लेकिन भारतीय राजनीति को सतह से थोड़ा नीचे जाकर देखने वाला कोई भी व्यक्ति समझ सकता है कि यह घटनाक्रम दरअसल एक गहरी रणनीति का हिस्सा था, और यही वह बिंदु है जहां विपक्ष की बुद्धिमत्ता पर तरस आता है क्योंकि उसने इस पूरे खेल को केवल संख्या के नजरिए से देखा, जबकि भाजपा इसे नैरेटिव और जनमत के स्तर पर खेल रही थी।

जब सरकार को पहले से यह स्पष्ट था कि एनडीए के पास दो-तिहाई बहुमत नहीं है और संविधान संशोधन जैसे विधेयक को पास कराना संभव नहीं होगा, तब भी ऐसे बिल को संसद में लाना किसी जल्दबाजी या राजनीतिक भूल का परिणाम नहीं हो सकता, बल्कि यह एक सुनियोजित कदम था, जिसका उद्देश्य केवल विधेयक पारित कराना नहीं बल्कि पूरे देश में एक मजबूत संदेश देना था, और भाजपा इसमें सफल भी रही, क्योंकि उसने महिला आरक्षण जैसे नैतिक रूप से मजबूत मुद्दे को केंद्र में रखकर विपक्ष को एक ऐसी स्थिति में खड़ा कर दिया जहां उसका हर कदम उसे नुकसान पहुंचाने वाला था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बार-बार की गई अपीलें, जिसमें उन्होंने सांसदों से अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने और देश की महिलाओं को उनका अधिकार देने की बात कही, केवल भावनात्मक अपील नहीं थीं बल्कि एक राजनीतिक फ्रेम तैयार करने की कोशिश थीं, जिसमें जो भी इस विधेयक का विरोध करेगा, वह सीधे-सीधे महिलाओं के अधिकारों के खिलाफ खड़ा दिखाई देगा, और यही वह जाल था जिसे विपक्ष समझ नहीं पाया, उसने तकनीकी मुद्दों–जैसे जनगणना का आधार, परिसीमन का समय और क्षेत्रीय असंतुलन–को आगे रखकर विरोध किया, लेकिन जनता के बड़े हिस्से के लिए यह बहस इतनी जटिल नहीं है, उनके लिए सीधा सवाल है कि महिलाओं को आरक्षण देने के मुद्दे पर कौन साथ खड़ा था और कौन विरोध में।

यही वह क्षण है जहां भाजपा की राजनीतिक चतुराई स्पष्ट रूप से सामने आती है, क्योंकि उसने यह सुनिश्चित किया कि भले ही विधेयक पारित न हो, लेकिन चर्चा का केंद्र वही बना रहे, और हुआ भी यही, आज बहस इस बात पर नहीं है कि बिल क्यों गिरा, बल्कि इस बात पर है कि महिलाओं को उनका हक देने में किसने बाधा डाली, और इस नैरेटिव में भाजपा खुद को प्रयास करने वाली पार्टी के रूप में प्रस्तुत कर रही है, जबकि विपक्ष रक्षात्मक मुद्रा में आ गया है।

विपक्ष के नेताओं, खासकर राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के बयान इस बात को और स्पष्ट करते हैं कि वे इस पूरे मुद्दे को किस तरह समझने में चूक गए, उन्होंने इसे एक राजनीतिक चाल कहकर खारिज करने की कोशिश की, लेकिन यह समझ नहीं पाए कि राजनीति में कई बार चाल ही असली खेल होती है, और जो उसे पहचान नहीं पाता, वह खुद मोहरा बन जाता है, यही कारण है कि आज विपक्ष इस 'जीत' पर भले ही संतुष्ट दिखाई दे रहा हो, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टि से यह उसके लिए एक नुकसानदायक स्थिति बन सकती है। भाजपा ने इस पूरे घटनाक्रम के जरिए एक साथ कई लक्ष्य साधे हैं, उसने महिला मतदाताओं के बीच अपनी प्रतिबद्धता का संदेश दिया, विपक्ष को नैतिक रूप से कठघरे में खड़ा किया और आने वाले चुनावों के लिए एक प्रभावी मुद्दा तैयार किया, खासकर उन राज्यों में जहां महिला मतदाता निर्णायक भूमिका निभाती हैं, यह कोई संयोग नहीं है कि इस पूरे घटनाक्रम का समय भी चुनावी माहौल के आसपास रखा गया, क्योंकि ऐसे समय में बनाए गए नैरेटिव का प्रभाव अधिक गहरा होता है।

इसके अलावा सरकार ने यह भी संकेत दिया कि वह अपने कदमों को चरणबद्ध तरीके से आगे बढ़ाएगी, अन्य संबंधित विधेयकों पर वोटिंग टालकर उसने यह स्पष्ट कर दिया कि यह प्रक्रिया अभी समाप्त नहीं हुई है, बल्कि यह एक लंबी रणनीति का हिस्सा है, जिसमें पहले राजनीतिक और सामाजिक माहौल तैयार किया जाएगा और फिर उपयुक्त समय पर संशोधित प्रस्ताव के साथ आगे बढ़ा जाएगा, यह दूरदर्शिता ही भाजपा को अन्य दलों से अलग बनाती है।

वहीं विपक्ष की स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत नजर आती है, जहां वह तात्कालिक जीत के उत्साह में इतना डूबा हुआ है कि उसे यह समझ ही नहीं आ रहा कि उसने अनजाने में भाजपा को एक बड़ा राजनीतिक हथियार दे दिया है, यही कारण है कि उसकी इस जीत में भी एक तरह की कमजोरी छिपी हुई है, क्योंकि वह जनभावनाओं के स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत नहीं कर पाया।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह पूरा घटनाक्रम केवल एक विधेयक के पास या फेल होने की कहानी नहीं है, बल्कि यह भारतीय राजनीति में बदलते खेल के नियमों का उदाहरण है, जहां केवल बहुमत ही नहीं बल्कि नैरेटिव, समय और मनोविज्ञान भी उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, भाजपा ने इन सभी पहलुओं को साधते हुए एक ऐसी चाल चली है जिसे समझने में विपक्ष पूरी तरह असफल रहा है, और यही कारण है कि आज उसकी 'हार' भी एक रणनीतिक जीत के रूप में दिखाई दे रही है, जबकि विपक्ष की 'जीत' में भी एक केतरह की असमंजस और दूरदृष्टि की कमी साफ झलकती है।

कांतिलाल मांडोत

अक्षय तृतीया अखंडता का प्रतीक है

वैशाख शुक्ल तृतीया आखातीज के रूप में जाना जाता है

वैशाख शुक्ल तृतीया का पावन दिन भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परम्परा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह तिथि अक्षय तृतीया अथवा आखातीज के नाम से जानी जाती है। 'अक्षय' का अर्थ है जो कभी क्षीण न हो, जो सदा बना रहे। यही कारण है कि इस दिन किए गए पुण्य, दान, तप और शुभ कार्यों को अक्षय अर्थात् अविनाशी फल देने वाला माना गया है। यह तिथि केवल ज्योतिषीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत विशिष्ट है। यह दिन अखण्डता, पवित्रता और निरन्तर प्रगति का प्रतीक है।

अक्षय तृतीया का एक विशेष महत्त्व यह भी है कि यह तिथि कभी खंडित नहीं होती। अन्य तिथियों की भाँति इसमें घट-बढ़ नहीं होता, इसलिए इसे स्थिरता और अखण्डता का प्रतीक माना गया है। जीवन में भी यही संदेश निहित है कि जो व्यक्ति अखण्डता और एकरूपता के साथ जीवन जीता है, वही सफलता और संतोष प्राप्त करता है। विभाजित और अस्थिर जीवन व्यक्ति को निरन्तर संघर्ष और असंतोष की ओर ले जाता है, जबकि एकाग्रता और एकता जीवन को श्रेष्ठ बनाती है।

इस पावन तिथि का गहरा सम्बन्ध जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से है। भगवान ऋषभदेव ने मानव समाज को जीवन जीने की दिशा प्रदान की। उन्होंने असि, मसि और कृषि के माध्यम से मानव को सभ्यता और संस्कृति का मार्ग दिखाया। उनके द्वारा दी गई शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए मार्गदर्शक हैं। अक्षय तृतीया का दिन विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी दिन भगवान ऋषभदेव ने अपनी दीर्घकालीन तपस्या का पारण किया था।

भगवान ऋषभदेव की तपस्या अत्यन्त कठोर और अनुकरणीय थी। उन्होंने दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् अखण्ड मौन और कठोर तप का पालन किया। उस समय समाज को श्रमण जीवन की विधियों का ज्ञान नहीं था, इसलिए उन्हें लंबे समय तक शुद्ध आहार प्राप्त नहीं हो सका। लोग श्रद्धा से उन्हें अनेक प्रकार के उपहार और धन अर्पित करते थे, किन्तु भगवान केवल निर्दोष आहार ही ग्रहण करते थे। परिणामस्वरूप वे निरंतर तप में लीन रहे और एक वर्ष से अधिक समय तक निराहार रहे। यह स्थिति तब परिवर्तित हुई जब हस्तिनापुर के युवराज श्रेयांसकुमार ने जातिस्मरण ज्ञान के माध्यम से भगवान की आवश्यकताओं को समझा। उन्होंने पूर्ण श्रद्धा और पवित्र भावना से भगवान को इक्षु रस का दान दिया, जिससे भगवान की तपस्या का पारण सम्पन्न हुआ। यह घटना न केवल भगवान की तपस्या का पूर्णत्व थी, बल्कि संसार में दान की परम्परा का भी प्रारम्भ थी। इस प्रकार अक्षय तृतीया का दिन तप और दान दोनों की महानता का प्रतीक बन गया।

तप का महत्त्व भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में अत्यधिक है। तप आत्मशुद्धि का साधन है, जो मनुष्य को उसके कर्मों के बन्धन से मुक्त करता है। तप के माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर की दुर्बलताओं को दूर करता है और आत्मबल को विकसित करता है। यह केवल शारीरिक कष्ट सहने का नाम नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि का मार्ग है। तप ही वह साधन है जो व्यक्ति को उच्चतम आध्यात्मिक अवस्था तक पहुँचाता है। अक्षय तृतीया के अवसर पर आज भी अनेक साधक वर्षीतप करते हैं। वर्षीतप एक कठिन साधना है, जिसमें एक दिन उपवास और दूसरे दिन पारण का क्रम चलता है। यह तपस्या आत्मसंयम, धैर्य और श्रद्धा का अद्भुत उदाहरण है। ऐसे तपस्वियों का सम्मान और अनुमोदन करना भी एक प्रकार का तप माना गया है। समाज में तप की परम्परा को जीवित रखना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह जीवन में अनुशासन और पवित्रता का संचार करती है। दान का भी इस तिथि से विशेष सम्बन्ध है। श्रेयांसकुमार द्वारा किए गए प्रथम दान ने यह सिद्ध किया कि दान केवल वस्तु का नहीं, भावना का होता है। शुद्ध भावना से किया गया दान ही श्रेष्ठ होता है। दान समाज में समानता और सहयोग की भावना को बढ़ाता है। यह केवल दूसरों की सहायता नहीं, बल्कि स्वयं के आत्मिक विकास का भी माध्यम है।

भारतीय संस्कृति में पर्व और त्यौहारों का विशेष महत्त्व है। यहाँ कहा जाता है कि भारत पर्वों का देश है, जहाँ हर दिन एक नया उत्सव लेकर आता है। ये पर्व जीवन में नवीनता और उत्साह का संचार करते हैं। कुछ पर्व केवल बाह्य उल्लास और मनोरंजन से जुड़े होते हैं, जबकि कुछ पर्व आत्मिक उन्नति और आध्यात्मिक जागरण का संदेश देते हैं। अक्षय तृतीया ऐसा ही एक पर्व है, जो त्याग, तप और दान की प्रेरणा देता है।

इस तिथि को बिना मुहूर्त देखे शुभ कार्य करने की परम्परा भी प्रचलित है। विवाह, गृह प्रवेश, व्यापार आदि कार्य इस दिन विशेष रूप से किए जाते हैं, क्योंकि यह दिन स्वयं में शुभ माना जाता है। यह विश्वास इस बात को दर्शाता है कि यह तिथि सकारात्मक ऊर्जा और शुभ फल प्रदान करने वाली है।

अक्षय तृतीया का एक अन्य पहलू यह भी है कि यह हमें पुरुषार्थ का संदेश देती है। भगवान ऋषभदेव ने अपने आचरण से यह सिखाया कि केवल भाग्य पर निर्भर रहना उचित नहीं है, बल्कि निरन्तर प्रयास करना आवश्यक है। उन्होंने स्वयं कठिन तपस्या करके यह उदाहरण प्रस्तुत किया कि जीवन में सफलता और मुक्ति प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ अनिवार्य है। अंततः अक्षय तृतीया केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक प्रेरणा है। यह हमें सिखाती है कि जीवन में अखण्डता, तप, दान और पुरुषार्थ का समन्वय आवश्यक है। यह तिथि हमें यह स्मरण कराती है कि सच्ची प्रगति केवल बाहरी साधनों से नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धता और आत्मबल से होती है। भगवान ऋषभदेव की तपस्या और श्रेयांसकुमार के दान की यह पावन परम्परा हमें सदैव प्रेरित करती रहे, यही इस पर्व का सच्चा संदेश है।

कांतिलाल मांडोत

अधर्म से कभी समझौता न करने वाला दिव्य प्रश्न - भगवान परशुराम

[टूटते समाज की शिराओं में बहता धर्म-संस्कार — भगवान परशुराम]

[इक्कीस बार पृथ्वी का शोधन करने वाला तेजस्वी योद्धा — भगवान परशुराम]

जब समय की धड़कनें असंतुलन की ओर झुकने लगती हैं, जब धर्म केवल ग्रंथों के शब्दों में सीमित होकर रह जाता है और अधर्म सत्ता के सिंहासन पर बैठकर निरंतर मानवता को कुचलने लगता है–तब इतिहास अपने भीतर से एक ऐसी अद्भुत शक्ति को जन्म देता है जो युगों की दिशा को बदल देने की क्षमता रखती है। परशुराम उसी दिव्य शक्ति के प्रतीक हैं। वे न केवल ऋषि-पुत्र हैं, न केवल एक महान योद्धा–वे उस जाग्रत चेतना का साक्षात स्वरूप हैं जो अन्याय और अत्याचार के सामने कभी भी मौन या निष्क्रिय नहीं रहती। परशुराम जयंती केवल एक स्मरण दिवस नहीं, बल्कि गहन आत्ममंथन का अवसर है कि क्या आज भी समाज में अन्याय के विरुद्ध वही प्रखर अग्नि जीवित है या फिर वह केवल पौराणिक कथाओं तक ही सीमित होकर रह गई है। जब ब्रह्मांडीय संतुलन डगमगाने लगा और क्षत्रिय सत्ता के अहंकार ने ऋषियों की तपोभूमि का अपमान करना प्रारंभ किया, तब महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका के घर एक ऐसे बालक का जन्म हुआ, जिसमें अग्नि और संयम का अद्भुत संगम था। भगवान विष्णु के अंशावतार परशुराम ने न कभी राजसी वैभव देखा, न ही विलासिता का आकर्षण–उनका पालन-पोषण एक साधारण तपोवन में हुआ। भगवान शिव की कृपा से प्राप्त दिव्य परशु उनके हाथों में केवल एक शस्त्र नहीं रहा, बल्कि धर्मरक्षा का शक्तिशाली प्रतीक बन गया। उनका बाल्यकाल ही यह संकेत देने लगा था कि यह साधारण बालक नहीं, बल्कि एक ऐसे युग-परिवर्तन की भूमिका है जो स्थापित व्यवस्था को गहराई से झकझोर देगा। परशुराम के जीवन में निर्णायक मोड़ तब आया जब हैहय वंश के प्रतापी किंतु अत्यंत अहंकारी राजा कार्तवीर्य अर्जुन ने महर्षि जमदग्नि के आश्रम पर आक्रमण कर दिया। कामधेनु गाय का बलपूर्वक अपहरण किया गया, आश्रम की पवित्रता भंग की गई और ऋषि का गहरा अपमान हुआ। जब परशुराम लौटे तो उनके भीतर वर्षों से संचित संयम की सीमा टूट चुकी थी। उन्होंने भीषण युद्ध में राजा की हजार भुजाओं का अंत कर दिया। किंतु यह संघर्ष यहीं समाप्त नहीं हुआ। प्रतिशोध की अगली लहर में उनके पिता की निर्मम हत्या कर दी गई, जिसने उनके जीवन को एक ऐसे निर्णायक मोड़ पर ला खड़ा किया जहाँ व्यक्तिगत पीड़ा और धर्मरक्षा का दायित्व एक साथ जुड़ गए। पिता की निर्मम हत्या ने परशुराम के अंतःकरण में एक ऐसा प्रचंड संकल्प प्रज्वलित किया, जिसकी गूंज इतिहास में अमिट बन गई। उन्होंने अन्यायपूर्ण क्षत्रिय सत्ता के संपूर्ण विनाश का व्रत लिया और उसे केवल घोषणा नहीं रहने दिया, बल्कि अपने अद्भुत शौर्य और अडिग कर्म से साकार कर दिखाया। मान्यता है कि उन्होंने इक्कीस बार पृथ्वी को अत्याचारी क्षत्रियों के भार से मुक्त किया। यह केवल विनाश की कथा नहीं, बल्कि एक कठोर उद्घोष था कि जब शक्ति धर्म और मर्यादा से विचलित हो जाती है, तब उसका पतन निश्चित होता है। समंतपंचक जैसे पावन स्थलों की गाथाएँ इसी भीषण संघर्ष की साक्षी हैं, जहाँ धर्म और अधर्म के बीच निर्णायक संग्राम घटित हुआ।परशुराम केवल संहार के प्रतीक नहीं थे, वे ज्ञान, अनुशासन और शिक्षा के भी परम आचार्य थे। महाभारत काल में उन्होंने भीष्म पितामह, आचार्य द्रोण और कर्ण जैसे महान योद्धाओं को शस्त्रविद्या का गहन और दिव्य ज्ञान प्रदान किया। उनका जीवन यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वास्तविक शक्ति केवल युद्ध कौशल में नहीं, बल्कि ज्ञान के सही मार्गदर्शन, संयम और नैतिक आधार में भी निहित होती है। भगवान श्रीराम से उनका दिव्य मिलन भी अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरक प्रसंग है, जहाँ उनका प्रारंभिक क्रोध श्रीराम की मर्यादा और दिव्यता के समक्ष शांत होकर विनम्रता में परिवर्तित हो गया। यह घटना यह सिद्ध करती है कि सच्चा ज्ञान वही है जो अहंकार को भी मिटाकर उसे विनम्रता और संतुलन में बदल दे।

कर्तव्य और पितृभक्ति की कठोर परीक्षा में परशुराम का जीवन एक अद्भुत उदाहरण बन गया। एक बार उनके पिता महर्षि जमदग्नि के आदेश ने माता रेणुका के प्रति कठिन स्थिति उत्पन्न की, और परशुराम ने बिना संशय या विलंब के पिता की आज्ञा का पालन किया। यह प्रसंग उनकी अटूट कर्तव्यनिष्ठा और आज्ञाकारिता को प्रकट करता है। आगे चलकर उन्हें दिव्य वरदान प्राप्त हुआ, जिससे जीवन में संतुलन पुनः स्थापित हुआ। अंततः उन्होंने संपूर्ण पृथ्वी का दान महर्षि कश्यप को देकर स्वयं को सांसारिक मोह और बंधनों से मुक्त कर लिया तथा महेंद्र पर्वत पर गहन तपस्या में लीन हो गए। यह यात्रा उनके जीवन के संघर्षमय चरण से आध्यात्मिक शांति और वैराग्य की ओर रूपांतरण का प्रतीक है। वर्तमान समय में परशुराम का चरित्र केवल एक पौराणिक कथा नहीं, बल्कि गहरी नैतिक दिशा और जीवन-दृष्टि का प्रतीक है। वे यह संदेश देते हैं कि शक्ति का वास्तविक उद्देश्य विनाश नहीं, बल्कि धर्म और न्याय की स्थापना होना चाहिए। उनका कुल्हाड़ा मात्र एक अस्त्र नहीं, बल्कि अन्याय के विरुद्ध जाग्रत चेतना और साहस का प्रतीक है। आज के समाज में, जहाँ नैतिकता और शक्ति का संतुलन बार-बार डगमगाता दिखाई देता है, वहाँ परशुराम का संदेश और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि क्रोध को भी धर्म की दिशा मिलनी चाहिए और ज्ञान को सदैव कर्म का आधार बनना चाहिए। धर्म, साहस और आत्मजागरण के संगम पर परशुराम जयंती केवल एक पर्व नहीं, बल्कि अंतःकरण को जाग्रत करने वाली चेतना है। यह दिन हमें यह दृढ़ प्रतिज्ञा लेने का अवसर देता है कि हम अन्याय के सम्मुख कभी मौन नहीं रहेंगे, सत्य के पथ से कभी विचलित नहीं होंगे और शक्ति को सदैव धर्म, रक्षा एवं न्याय की स्थापना का माध्यम बनाएंगे। उनका जीवन इस शाश्वत सत्य को उद्घाटित करता है कि वास्तविक मनुष्य वही है जो ज्ञान की गहराई और पराक्रम की प्रचंडता को एक साथ साध सके। जब हम उनके आदर्शों को अपने आचरण में उतारते हैं, तभी यह पर्व सार्थक बनता है और धर्म की वह दिव्य ज्योति पुनः प्रज्वलित होकर संपूर्ण समाज को आलोकित करती है। जय भगवान परशुराम।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

कई प्रश्नों को जन्म देता है महिला आरक्षण विधेयक का गिरना

भारत जैसे जीवंत लोकतंत्र में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी न केवल एक सामाजिक आवश्यकता है, बल्कि हमारे संवैधानिक आदर्शों की अनिवार्य शर्त भी है। सांख्यिकीय दृष्टि से देखें तो 2011 की जनगणना के अनुसार प्रति 1000 पुरुषों पर 943 महिलाएँ थीं, जबकि एनएफएचएस-5 के नवीनतम आँकड़े लिंगानुपात में सुधार दर्शाते हुए प्रति 1000 पुरुषों पर 1020 महिलाओं की उपस्थिति दर्ज करते हैं। स्पष्ट है कि देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। ऐसे में यह प्रश्न उठना अपरिहार्य है कि क्या नीति-निर्धारण के सर्वोच्च मंचों(संसद और विधानसभाओं)पर उनकी भागीदारी इस अनुपात के अनुरूप है? राजनीति और समाजशास्त्र के विशेषज्ञों का मत है कि लोकसभा और विधानसभा में महिलाओं के न्यून प्रतिनिधित्व के कारण उनके सरोकारों को वह स्वर नहीं मिल पाता, जिसकी वे हकदार हैं। विडंबना देखिए कि यदि इन सदनों में उनकी सहभागिता प्रभावी होती, तो क्या महिलाओं के उत्थान से संबंधित कोई विधेयक इस तरह गिर सकता था? हाल ही में, वर्ष 2029 के चुनावों से महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से लाया गया 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' (131वाँ संविधान संशोधन विधेयक) संसद में दो-तिहाई बहुमत न मिल पाने के कारण पारित नहीं हो सका। केंद्र सरकार का यह महत्वाकांक्षी स्वप्न राजनीति की भेंट चढ़ गया। यह घटना भारतीय राजनीति की जटिलताओं और प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने को विवश करती है। यहाँ विचारणीय है कि क्या महिला प्रतिनिधित्व केवल एक चुनावी मुद्दा भर है? महिला आरक्षण का प्रश्न दशकों से लंबित है। यह मात्र एक विधायी प्रस्ताव नहीं, अपितु लैंगिक समानता की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। इसके बावजूद विधेयक का गिरना क्या यह संकेत नहीं देता कि महिला सशक्तिकरण को आज भी राजनीतिक लाभ-हानि के तराजू पर तौला जा रहा है? जहाँ सत्तापक्ष ने प्रधानमंत्री की अपील और गृहमंत्री के स्पष्टीकरण के माध्यम से अपनी प्रतिबद्धता दर्शाने का प्रयास किया, वहीं विपक्ष का रुख कई गंभीर प्रश्न छोड़ गया जैसे ?क्या विपक्ष महिला सशक्तिकरण के प्रति वास्तव में गंभीर था?;?क्या 'परिसीमन' जैसे तकनीकी विषय महिला प्रतिनिधित्व से अधिक महत्वपूर्ण थे?;?क्या विपक्षी दलों के लिए 'विरोध के लिए विरोध' की राजनीति एक विवशता थी या सोची-समझी रणनीति?; क्या क्षेत्रीय दलों के शीर्ष नेतृत्व में यह असुरक्षा है कि आरक्षण लागू होने से उनके परिवारवाद का वर्चस्व कम हो जाएगा? विपक्ष के कुछ गुटों का तर्क था कि इस आरक्षण के भीतर पिछड़ी, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए अलग से प्रावधान होना चाहिए। यह तर्क सैद्धांतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, किंतु क्या इस आधार पर पूरे विधेयक को ही अस्वीकार कर देना उचित था?, क्या सुधार की प्रक्रिया को सिरे से खारिज करना ही समाधान है? राजनीतिक दल चाहते तो विधेयक का समर्थन कर अपनी पार्टियों के भीतर आंतरिक स्तर पर पिछड़ी, दलित, आदिवासी जातियों को प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था कर सकते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि विपक्षी दलों ने इसे सामाजिक न्याय के बजाय केवल एक राजनीतिक दांवपेच के रूप में देखा। संसद की यह परिणति समस्त देशवासियों को सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हमारा राजनीतिक वर्ग उस संवैधानिक समानता के आदर्श को स्वीकार करने के लिए मानसिक रूप से तैयार है? मेरा ऐसा मानना है कि बिना महिलाओं को नीति-निर्धारण में उचित स्थान दिए, 'सशक्त भारत' का स्वप्न कभी साकार नहीं हो सकता।

डा. मनमोहन प्रकाश

क्या भाजपा के लिए व्हाट्सएप ही संदेश देने का सबसे बड़ा साधन है ?

भाजपा व्हाट्सएप की दुनिया में इतनी रच-बस गई है कि संसद के विशेष सत्र के लिए बैकग्राउंड ब्रीफ़ भी केंद्रीय गृह मंत्रालय की तरफ़ से इसी सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिए सर्कुलेट किया गया। इसके लिये कई स्थापित नियमों को नज़रअंदाज़ किया गया। विशेष सत्र में जिन संशोधनों पर चर्चा और उन्हें पारित करने की योजना है, वे कानून मंत्रालय के दायरे में आते हैं। लेकिन विपक्ष को इसकी जानकारी केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दफ्तर से दी गई। इसके अलावा, ऐसे अहम फैसलों के लिए ब्रीफ़ पर या तो पहले से ही सर्वदलीय बैठक में चर्चा होनी चाहिए, या फिर संबंधित मंत्रालय के लेटरहेड पर सही फ़ॉर्मेट में सर्कुलेट किया जाना चाहिए। यह उन अहम फ़ैसलों के प्रति एक लापरवाह रवैया दिखाता है, जो भारत के चुनावी नक्शे को पूरी तरह बदल देंगे। व्हाट्सएप मैसेज 16 अप्रैल से कुछ ही दिन पहले आया था, जिस दिन सत्र शुरू होना था। बिल खुद सांसदों को सत्र शुरू होने से दो दिन पहले सर्कुलेट किए गए थे। इससे विपक्षी पार्टियों को बिलों का अध्ययन करने और प्रतिनिधि लोकतंत्र के भविष्य पर उनके असर को समझने के लिए बहुत ही कम समय मिल पाया। अगर व्हाट्सएप ही संसदीय संचार का भविष्य बनने वाला है, तो फिर एक विशाल सचिवालय को फंड देने का कोई मतलब नहीं रह जाता, जिसका काम संसद से जुड़े सभी मामलों पर बुलेटिन, संदेश और चिट्ठियों को संभालना होता है।

सांसदों की संख्या बढ़ने के साथ बढ़ेंगे बेतहाशा खर्च

परिसीमन पर चल रही बहस में, एक अहम मुद्दे को नज़रअंदाज़ कर दिया गया है वह है एक बड़ी संसद से सरकारी खजाने पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ। इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि न सिर्फ़ संसद की सदस्य संख्या 543 से बढ़कर लगभग 816 हो जाएगी, बल्कि पूरे देश की राज्य विधानसभाओं में भी सदस्यों की संख्या में भारी बढ़ोतरी देखने को मिलेगी। सरकारी खजाने पर लोकसभा के पांच साल के कार्यकाल के लिए, लगभग 5,855 करोड़ रुपये आता है। यह तो सिर्फ़ लोकसभा के सांसदों की सैलरी का खर्च है। इसके अलावा, हर सांसद को सांसद निधि के तहत सालाना 5 करोड़ रुपये मिलते हैं; साथ ही मुफ्त आवास, यात्रा भत्ता, मुफ्त चिकित्सा सुविधा, समर्पित स्टाफ़ और जरूरत पड़ने पर सुरक्षा भी मिलती है। फिर, एक और छोटी सी बात है हर उस सांसद के लिए मासिक पेंशन, जो अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करता है। 816 सांसदों की सैलरी पर टैक्स देने वालों को पड़ने वाले खर्च का एक मोटा-मोटा अनुमान 40,000 से 50,000 करोड़ रुपये के बीच है।

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ल द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

चन्दर सिंह राठौर बने अखिल भारतीय किसान संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष

लखनऊ। अखिल भारतीय किसान संघ के प्रदेश अध्यक्ष राजेश सिंह चौहान द्वारा बन्थरा निवासी चन्दर सिंह राठौर को शुक्रवार को अखिल भारतीय किसान संघ का प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। चन्दर सिंह राठौर ने कहा कि मैं संगठन के लिए पूरी निष्ठा के साथ कार्य करूंगा। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्या को सरकार तक पहुंचाने का कार्य भी करूंगा ताकि अन्नदाता किसी भी स्तर पर अपने आप को कमजोर महसूस न कर सके। चन्दर सिंह राठौर के प्रदेश उपाध्यक्ष बनाए जाने पर क्षेत्रीय लोगों ने बधाई दी।

जागरूकता संगोष्ठी का किया गया आयोजन

बिसवां/सीतापुर इनर व्हील क्लब बिसवां द्वारा सामाजिक जागरूकता अभियान के अंतर्गत कृष्ण स्वरूप मेमोरियल सरस्वती बालिका विद्या मंदिर, अमर नगर की छात्राओं के लिए 'सेव वाटर- जल संरक्षण' विषय पर एक जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम क्लब की अध्यक्षा गुरमीत कौर एवं सचिव तुलसी गुप्ता के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रमाणित प्रशिक्षक अंजलि राजवंशी द्वारा छात्राओं को जल संरक्षण के महत्व, पानी की बढ़ती कमी तथा दैनिक जीवन में पानी बचाने के सरल एवं प्रभावी उपायों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने छात्राओं को जल बचाने के लिए प्रेरित करते हुए बताया कि छोटे-छोटे प्रयास भविष्य में बड़े बदलाव ला सकते हैं। अध्यक्षा गुरमीत कौर ने कहा कि जल ही जीवन का आधार है और नई पीढ़ी को जल संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। कार्यक्रम में कोऑर्डिनेटर रेनू मेहरोत्रा, कोऑर्डिनेटर गुंजन सेठ, एकता गुप्ता, किरण सिंघल, शिवानी अग्रवाल सहित क्लब की अन्य सदस्याएं उपस्थित रहीं।

श्री राम चम्पा देवी विघालय बिसवां में नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम हुआ संपन्न

बिसवां/सीतापुर श्री राम चम्पा देवी विद्यालय, बिसवां में आयोजित कार्यक्रम नारी शक्ति वंदन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी रही। इस अवसर पर विधायक निर्मल वर्मा ने कहा कि आज देश की नारी शक्ति दुखी है। विपक्ष द्वारा लोकसभा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम के लिए जरूरी संविधान संशोधन बिल को पारित नहीं होने देना निंदनीय ही नहीं, बल्कि बेहद पीड़ादायक है। उन्होंने कहा कि 33 प्रतिशत आरक्षण जैसे ऐतिहासिक अवसर को रोकना घोर पाप है। वहीं महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष कंचन प्रभा पांडे ने कहा कि विपक्ष का यह विरोध नारी शक्ति के खिलाफ खुला ऐलान है। जो लोग पहले नारी वंदन की बात करते थे, वे आज वोट बैंक की राजनीति में बेटियों के अधिकारों की अनदेखी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश की माताएं, बहनें और बेटियां सब देख रही हैं। कार्यक्रम में जिला उपाध्यक्ष जया सिंह, जिला महामंत्री सुधाकर शुक्ला, नगर अध्यक्ष रजनी गुप्ता पूर्व अध्यक्ष पंकज गुप्ता शालिनी गुप्ता, रानी दीक्षित सहित बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
स्वतंत्र प्रभात
जो लिखेगा, वही टिकेगा
www.swatantraprabhat.com

सिकंदराबाद में नाली निर्माण की बजाय पाइपलाइन डालने से जलभराव

● किसान नेता ने समाधान दिवस में उठाई समस्या

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महमूदाबाद- सीतापुर विकासखंड पहला अंतर्गत ग्राम पंचायत सिकंदराबाद में जिला सहकारी बैंक के पास खड़ंजा मार्ग पर पक्की नाली के अभाव में गंभीर जलभराव की समस्या बनी हुई है। बताया जा रहा है कि नाली निर्माण की बजाय पाइपलाइन डाले जाने के कारण गंदा पानी रास्ते पर ही जमा हो रहा है, जिससे आवागमन बाधित हो रहा है। इस मार्ग से जिला सहकारी बैंक के शाखा प्रबंधक सहित कई ग्रामीणों को प्रतिदिन गुजरना पड़ता है, लेकिन रास्ते में कीचड़ और गंदे पानी के चलते लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के वरिष्ठ जिला उपाध्यक्ष सच्चिदानंद सिंह पटेल ने इस समस्या को लेकर कई बार खंड विकास अधिकारी पहला एवं उपजिलाधिकारी महमूदाबाद को अवगत कराया, लेकिन आरोप है कि अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। प्रशासनिक उदासीनता से आक्रोशित किसान नेता सच्चिदानंद सिंह पटेल ने संपूर्ण समाधान दिवस, तहसील महमूदाबाद में शिकायती पत्र देकर समस्या के शीघ्र समाधान की मांग की है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही समस्या का निराकरण नहीं हुआ, तो आंदोलन करने को बाध्य होंगे।

महमूदाबाद में 'पोषण पखवाड़ा' कार्यक्रम आयोजित

● संतुलित आहार पर दिया गया जोर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महमूदाबाद- सीतापुर कुपोषण, एनीमिया और शारीरिक कमजोरी जैसी समस्याओं से निपटने के लिए दैनिक भोजन में पोषक तत्वों का समावेश बेहद जरूरी है। जनभागीदारी से ही स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है और इसके लिए हर व्यक्ति को अपने परिवार के खान-पान पर विशेष ध्यान देना होगा।

यह बातें सीता इंटर कॉलेज के शास्त्री सभागार में शुक्रवार को राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तहत आयोजित 'पोषण पखवाड़ा' कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी शिव सेवक मिश्र ने कही। उन्होंने विद्यार्थियों को संतुलित आहार के प्रति जागरूक करते हुए बच्चों, किशोरियों और गर्भवती महिलाओं के पोषण स्तर में सुधार पर विशेष जोर दिया।

कार्यक्रम अधिकारी ने स्वच्छता, स्वास्थ्य और पोषण के आपसी संबंध को विस्तार से समझाया। साथ ही छात्र-छात्राओं व अभिभावकों को पौष्टिक भोजन, हरी सब्जियों, मौसमी फलों और दूध के नियमित सेवन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने जंक फूड से दूर रहने की सलाह देते हुए सभी से 'पोषण पखवाड़ा' के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने की अपील की। इस अवसर पर एनएसएस स्वयंसेवकों ने पोस्टर और स्लोगन के माध्यम से पोषण के प्रति जागरूकता फैलाने का कार्य किया। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक, छात्र-छात्राएं और अभिभावक उपस्थित रहे।

लखनऊ में बहन की शादी का कार्ड बांट रहे बड़े भाई की सड़क हादसे में मौत, छोटा भाई और मित्र घायल

मलिहाबाद (लखनऊ)। माल के शाहपुर गोडवा गांव निवासी युवक अपने भाई और दोस्त के साथ छोटी बहन की शादी का कार्ड बांटने निकला। वापसी के दौरान तेज रफ्तार ट्रैक्टर-ट्राली ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। घटना में बड़े भाई की मौके पर ही मौत हो गई। छोटे भाई और एक दोस्त की हालत नाजुक है। पुलिस ने अज्ञात ट्रैक्टर-ट्राली के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। गोडवा गांव निवासी 26 वर्षीय परमेश्वर की छोटी बहन रेशमा का 24 अप्रैल को तिलक और आगामी 29 अप्रैल को शादी है। पूरा परिवार शादी की तैयारी में लगा था। परेमश्वर चंडीगढ़ में मजदूरी करते थे और बहन की शादी के लिए हाल ही में घर लौटे थे। शुक्रवार की शाम वह छोटे भाई राम और मित्र रजनेश के साथ बैदानगर निवासी मौसी के घर शादी का कार्ड देकर लौट रहे थे। बहन को दहेज में जो बाइक देनी थी तीनों लोग उसी बाइक से निकले थे। बैदानगर पुलिया के पास तेज रफ्तार अज्ञात ट्रैक्टर-ट्राली ने उनकी बाइक में जोरदार टक्कर मारी। टक्कर लगने से तीनों लोग छिटककर सड़क पर गिर गए। अधिक खून बहने से परमेश्वर की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। छोटा भाई और मित्र को गंभीर चोटें आई। घटना के बाद मौके पर राहगीरों की भीड़ जुट गई।

बढ़ी क्षमता, घटी सुविधा, जर्जर तारों ने बिगाड़ी काल्हीगांव की बिजली व्यवस्था

● आधी-अधूरी बिजली योजना का दंश झेल रहे ग्रामीण, रोज फॉल्ट, रोज खर्च

सिस्टम फेल, ग्रामीण बेहाल-लाइन ठीक कराने के लिए जेब ढीली करने को मजबूर लोग

हर दिन फॉल्ट, हर दिन खर्च, काल्हीगांव में बिजली बनी मुसीबत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लालगंज(रायबरेली)। विकासखंड सरेनी के अंतर्गत विद्युत व्यवस्था एक बार फिर सवालों के घेरे में है।मलके गांव उपखंड क्षेत्र के काल्हीगांव में राजीव गांधी विद्युतीकरण योजना के तहत बिछाई गई पुरानी लाइन पर बिना तार बदले ही 100 केवी का ट्रांसफार्मर स्थापित कर दिया गया है। इस आधे-अधूरे कार्य का खामियाजा अब ग्रामीणों को रोजाना भुगतना पड़ रहा है।ग्रामीणों के अनुसार,ट्रांसफार्मर की क्षमता बढ़ा दी गई है,लेकिन जर्जर और कम क्षमता वाले पुराने तार ही लगे हुए हैं। नतीजतन पूरे गांव में विद्युत आपूर्ति केवल एक ही फेज से संचालित हो रही है।इससे लोड़ बढ़ने पर बार-बार फॉल्ट की समस्या उत्पन्न हो जाती है,जिससे गांव अंधेरे में डूब जाता है।स्थिति इतनी बदतर है कि ग्रामीणों को हर दूसरे दिन लाइनमैन को बुलाना पड़ता है।आरोप है कि लाइन ठीक कराने के नाम पर उपभोक्ताओं से जेब से पैसा खर्च कराया जा रहा है। मजबूरी में लोग भुगतान कर बिजली बहाल कराते हैं, जिससे उनमें आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

ग्रामीण कृष्ण कुमार अग्निहोत्री, गोवर्धन अग्निहोत्री, राजन मिश्रा, सधन अग्निहोत्री, सुधीर अग्निहोत्री, विजय शंकर शुक्ला,राज शंकर शुक्ला, पुतानी शुक्ला, दुर्गेश शुक्ला, राजू अग्निहोत्री, कपिल त्रिवेदी, चक्रपाल सिंह आदि का कहना है कि विभागीय लापरवाही के चलते यह समस्या लंबे समय से बनी हुई है,लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला गया।अगर समय रहते तारों का उन्नयन और तीनों फेज की सुचारू आपूर्ति सुनिश्चित नहीं की गई,तो स्थिति और गंभीर हो सकती है।ग्रामीणों ने विद्युत विभाग के उच्चाधिकारियों से तत्काल संज्ञान लेकर समस्या का स्थायी समाधान कराने की मांग की है,ताकि उन्हें रोज- रोज की परेशानी और अनावश्यक आर्थिक बोझ से राहत मिल सके।वहीं जब इस संबंध में अवर अभियंता हेमंत मिश्रा से दूरभाष के माध्यम से संपर्क साधने का प्रयास किया गया तो उन्होंने पूरी बेल जाने के बाद भी कॉल रिसीव करना मुनासिब नहीं समझा, जिससे उनका पक्ष नहीं जाना जा सका।वहीं जब इस संबंध में एसडीओ सरेनी यशवीर सिंह से बात की गई तो उन्होंने बताया कि मामला संज्ञान में नहीं है,यदि ऐसा है तो जेई मलकेगांव से मामले की जानकारी लेने के बाद शीघ्र ही समस्या का समाधान कराया जाएगा।

राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाये जाने हेतु बैठक सम्पन्न

रायबरेली:- उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निर्देशानुसार व अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण/जनपद न्यायाधीश रायबरेली अमित पाल सिंह के दिशा-निर्देशन में 09 मई 2026 को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना है। राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने हेतु बैंकों में लंबित प्री-लिटिगेशन स्तर के मामलों के अधिक से अधिक निस्तारण की रुप-रेखा तय किए जाने हेतु सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण अनिशा की अध्यक्षता में बैठक आहूत की गयी। बैठक में सचिव द्वारा उपस्थित शाखा प्रबन्धकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये जिससे अधिक से अधिक मामलों के निस्तारण कर राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाया जा सके। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय लोक अदालत हेतु अधिक से अधिक प्री-लिटिगेशन वादों को चिन्हित किये जाने व राष्ट्रीय लोक अदालत का प्रचार-प्रसार किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में अग्रणी जिला प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा अमेठी, अग्रणी जिला प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा रायबरेली, बड़ौदा यू0पी0 ग्रामीण बैंक, केनरा बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, बैंक ऑफ इण्डिया, यूको बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक, इंडियन बैंक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया व भारतीय स्टेट बैंक रायबरेली के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बरेसर प्रभारी धिरेन्द्र कुमार को पुलिस अधीक्षक ने किया सम्मानित, कहां ऐसे ही प्रभारी की जरूरत

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गाजीपुर। गाजीपुर पुलिस अधीक्षक डाक्टर इरज रजा ने पुलिस लाईन स्थित सभागार में सभी प्रभारियों व पुलिस उपाधीक्षकों के साथ समीक्षा बैठक कर रहे थे । जिसमें उन्होंने ने जिले के टाप टेन अपराधियों,गुंडा। माफियाओं के साथ ही जिले में कानून व्यवस्था बनाने हेतु चर्चा की। जहां उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाले थाना प्रभारियों की जमकर तारीफ की इसी दौरान उन्होंने जिले के बरेसर प्रभारी धीरेंद्र कुमार को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान उन्होंने कहां की धिरेन्द्र कुमार अपने थाने क्षेत्र में सख्त पुलिसिंग कर बदमाशों व मनबढ़ लोगों पर सख्त कार्रवाई की यही नहीं थाना प्रभारी ने अपने साथियों के साथ अच्छे तालमेल की वज़ह से एक माह के अंदर ही । थाने में सभी लम्बित मुकदमों का निस्तारण किया। बता दें की थाना प्रभारी धिरेन्द्र कुमार का जो इस समय जिले में चर्चा हो रही है । वो ऐसे ही नहीं हो रही है, थाना प्रभारी धिरेन्द्र कुमार पर एक नजर डालें तो पुलिस अधीक्षक द्वारा दिये गये हर जिम्मेदारी को बखूबी निभाया उनको जहां जहां तैनाती दी गई। उस थाने क्षेत्र में हो रहे अपराधों पर हंटर चलाते हुए अपराधियों को जेल भेज थाने क्षेत्र से अपराध को समाप्त किया । इसके साथ ही वो थाने में आये हर एक फरियादियों की समस्याओं सुन उनका तुरंत निस्तारण कर एक अच्छे थाना प्रभारी का कर्तव्य निभाया। थाना प्रभारी धिरेन्द्र कुमार सख्त कार्रवाई करने के वजह से मनबढ़ लोगों व अपराधी किस्म के लोगों में डर बना रहता है। वहीं थाने में अपनी समस्याओं के साथ आये लोगों की बातों को सुनकर उनका निस्तारण करते हैं।

देशी लौकिया गौशाला के निरीक्षण में खुली बड़ी लापरवाही

महमूदाबाद- सीतापुर। विकास खण्ड रामपुर मथुरा अंतर्गत स्थित देशी लौकिया गौ-संरक्षण केंद्र पर वायरल वीडियो के बाद जागे प्रशासन द्वारा निरीक्षण किया गया, जिसमें कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आये है। निरीक्षण के दौरान जीपीएस लोकेशन के आधार पर खुदाई में एक गोवंश का शव मिला, जबकि अन्य शव पहले ही अलग-अलग गड्ढों में दबाए जा चुके थे।

मौके पर चारा पर्याप्त मात्रा में मिला, लेकिन रिकॉर्ड में भारी अनियमितता पाई गई। 10 अप्रैल के बाद से स्टॉक रजिस्टर अपडेट नहीं किया गया था, वहीं चिकित्सा, टीकाकरण और टैगिंग से जुड़े दस्तावेज भी मौके पर उपलब्ध नहीं मिले। अधिकारियों के अनुसार गोवंश की मौत स्वाभाविक बताई गई है और किसी संक्रामक बीमारी के प्रमाण नहीं मिले हैं। हालांकि निरीक्षण में संबंधित जिम्मेदारों की लापरवाही साफ उजागर हुई है। रिपोर्ट को आगे आवश्यक कार्रवाई के लिए भेज दिया गया है।

Mind Matters: A Neurological Health Awareness' विषय पर एक महत्वपूर्ण तकनीकी व्याख्यान का आयोजन हुआ

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), उत्तर प्रदेश राज्य केंद्र, लखनऊ द्वारा 'Mind Matters: A Neurological Health Awareness' विषय पर एक महत्वपूर्ण तकनीकी व्याख्यान का आयोजन इंजीनियर्स भवन, आई.ई.आई., रिवर बैंक कॉलोनी, लखनऊ में किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ. धवल नारंग (एम.डी., डी.एम., न्यूरोलॉजी, लखनऊ) ने सहभागिता की। अपने व्याख्यान में उन्होंने न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य के महत्व, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता तथा वर्तमान जीवनशैली के प्रभावों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि स्वस्थ मस्तिष्क व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है तथा संतुलित दिनचर्या, उचित आहार और तनाव प्रबंधन के माध्यम से मानसिक एवं न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य को बेहतर बनाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक जीवन में बढ़ते तनाव, डिजिटल निर्भरता और अनियमित दिनचर्या के कारण मस्तिष्क संबंधी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं, जिन्हें समय रहते जागरूकता एवं सही मार्गदर्शन के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता इं. वी.पी. सिंह, अध्यक्ष, आई.ई.आई. उत्तर प्रदेश राज्य केंद्र, लखनऊ द्वारा की गई। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा कि इस प्रकार के विषय समाज के लिए अत्यंत उपयोगी हैं और इससे आमजन में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने मुख्य वक्ता का आभार व्यक्त करते हुए संस्था द्वारा ऐसे कार्यक्रमों के निरंतर आयोजन की बात कही। कार्यक्रम के संयोजक इं. महेश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं समन्वय संस्था के मानद सचिव इं. एन.के. निषाद द्वारा किया गया। अंत में उन्होंने सभी उपस्थित अभियंताओं, शिक्षाविदों एवं विद्यार्थियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

दुबग्गा में तेज रफ्तार का कहर: बाइक की टक्कर से मलिहाबाद निवासी युवक की मौत, दो मासूम बेटे हुए बेसहारा, परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मलिहाबाद। मलिहाबाद क्षेत्र के रामपुर गांव से एक बेहद दर्दनाक सड़क हादसे की खबर सामने आई है, जिसने पूरे इलाके को झकझोर कर रख दिया। शुक्रवार, 17 तारीख को शाम करीब 5 बजे रामपुर बस्ती निवासी संजय सिंह (उम्र 35 वर्ष), पुत्र रामपाल सिंह, अपने साथी वीरेंद्र सिंह के साथ किसी काम से पैदल बसंत कुंज सेक्टर पी से दुबग्गा सब्जी मंडी की ओर जा रहे थे। इसी दौरान पीछे से आ रही एक तेज रफ्तार बाइक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी।

बताया जा रहा है कि बाइक (HF डिलक्स, नंबर UP-32 QE1387) को चला रहा चालक बेहद लापरवाही और तेज गति में था। अचानक हुई इस टक्कर में संजय सिंह गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। आसपास मौजूद स्थानीय लोगों ने मानवता दिखाते हुए बिना देर किए घायल संजय सिंह को ऐरा अस्पताल पहुंचाया, लेकिन वहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस घटना के बाद मृतक के परिवार में कोहराम मच गया है। संजय सिंह अपने परिवार के इकलौते कमाने वाले थे और रोजी-रोटी के लिए दुबग्गा, लखनऊ में रहकर मेहनत मजदूरी करते थे। उनके पीछे पत्नी और दो मासूम बेटे हैं, जिनका रो-रोकर बुरा हाल है। पिता की अचानक मौत से बेटों के सिर से साया उठ गया है दोनों बेटों की उम्र प्रिंस 8 साल व एक की 4 साल है,और अब उनके भविष्य पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं। उनकी पढ़ाई-लिखाई और जीवनयापन पर इसका गहरा असर पड़ने की आशंका जताई जा रही है।

घटना के बाद मृतक के पिता रामपाल सिंह ने थाना ठाकुरगंज में लिखित तहरीर देकर अज्ञात बाइक चालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और आरोपी की तलाश की जा रही है। इस हादसे ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। क्या यह सिर्फ एक सड़क दुर्घटना थी या इसके पीछे कोई साजिश भी हो सकती है? फिलहाल पुलिस हर पहलू को ध्यान में रखकर जांच कर रही है। परन्तु पुलिस पर कुछ सवाल भी उठ रहे है कि जब मृतक के पिता गाड़ी नंबर तहरीर में दर्ज करने को कहा तो कुछ पुलिसकर्मियों ने उन्हें मना क्यों किया? और जब गाड़ी मालिक का नाम व पता मिल गया था तो अभी तक उनको गिरफ्तार क्यों नहीं किया?

वहीं स्थानीय लोगों और परिजनों ने प्रशासन से मांग की है कि दोषी चालक को जल्द गिरफ्तार कर कड़ी सजा दी जाए, साथ ही सरकार से भी अपील की गई है कि पीड़ित परिवार, की मदद के लिए आर्थिक सहायता और शिक्षा की व्यवस्था की जाए। अब देखना यह है कि प्रशासन इस मामले में कितनी तेजी और गंभीरता से कार्रवाई करता है और क्या इस बेसहारा परिवार को न्याय के साथ-साथ मदद भी मिल पाती है या नहीं।

तहसील सभागार में संपूर्ण समाधान दिवस आयोजित, 35 में से 6 शिकायतों का मौके पर निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/ रायबरेली। तहसील सभागार महराजगंज में आज शनिवार को तहसीलदार मंजुला मिश्रा एवं एसडीएम गौतम सिंह की अध्यक्षता में 'संपूर्ण समाधान दिवस' का आयोजन संपन्न हुआ। इस दौरान दूर-दराज से आए फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया और संबंधित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए गए। समाधान दिवस में कुल 35 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें पुलिस विभाग की 11, राजस्व विभाग की 12, विकास विभाग की 1 तथा अन्य विभागों की 11 शिकायतें शामिल रहीं। इनमें से मौके पर केवल 6 शिकायतों का निस्तारण किया जा सका, जबकि शेष शिकायतों को समयबद्ध निस्तारण हेतु संबंधित विभागों को प्रेषित कर दिया गया।

तहसीलदार मंजुला मिश्रा ने अधिकारियों को सख्त निर्देश देते हुए कहा कि जनसमस्याओं के समाधान में किसी भी प्रकार की लापरवाही या शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने पुलिस और राजस्व से जुड़े मामलों में स्थलीय निरीक्षण कर निष्पक्ष कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

इस अवसर पर एसडीएम गौतम सिंह, तहसीलदार मंजुला मिश्रा, नायब तहसीलदार उमेश चंद्र त्रिपाठी, खंड विकास अधिकारी वर्षा सिंह सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

यूपी के किसानों के लिए नया आदेश जारी, अगर नहीं भरा ऑनलाइन फॉर्म तो इस बार मिलों में नहीं बेच पाएंगे गन्ना

लखनऊ। पेराई सत्र 2026-27 के लिए गन्ना सर्वेक्षण नीति जारी कर दी गई है। सर्वेक्षण एक मई से 30 जून तक किया जायेगा। गन्ना उत्पादन के सही आकलन और गन्ना किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिए गन्ना सूचना प्रणाली एवं स्मार्ट गन्ना किसान के तहत हैंड हेल्ड कंप्यूटर व एंड्रायड बेस्ड मशीन के माध्यम से जीपीएस सर्वे होगा। गन्ना किसानों द्वारा बोये गये गन्ना क्षेत्रफल के संबंध में वेबसाइट enquiry.caneup.in पर घोषणा-पत्र उपलब्ध होंगे, जिसे किसानों को आनलाइन भरना होगा। अपर मुख्य सचिव गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग वीना कुमारी के अनुसार जिन किसानों के द्वारा आनलाइन घोषणा-पत्र उपलब्ध नहीं कराए जाएंगे, उनका सट्टा आगामी पेराई सत्र 2026-27 में विभाग द्वारा कभी भी बंद किया जा सकता है। सर्वे नीति में पारदर्शिता के लिए सर्वे टीम के खेत पर पहुंचने की तिथि, सर्वे टीम के इंचार्ज के नाम व मोबाइल नंबर की सूचना एसएमएस के माध्यम से तीन दिन पहले किसानों को भेजी जाएगी। सर्वेक्षण टीम में राजकीय गन्ना पर्यवेक्षक, चीनी मिल कार्मिक के साथ संबंधित सर्किल के किसान की उपस्थिति अनिवार्य होगी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने 24 घंटे में बदला आदेश, कांग्रेस के MP राहुल गांधी के विरुद्ध नहीं होगी FIR

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

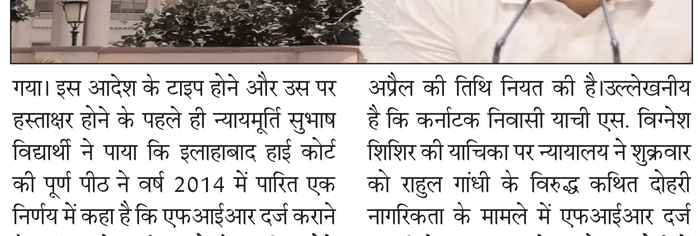

लखनऊ। इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ बेंच ने कांग्रेस के सांसद राहुल गांधी के खिलाफ अपने एक फैसले पर यू टर्न मारा है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के कथित दोहरी नागरिकता मामले में एफआईआर दर्ज करने के ओपन कोर्ट में सुनाये गए अपने आदेश को खंडपीठ ने रोक दिया है। हाई कोर्ट लखनऊ बेंच की वेबसाइट पर शनिवार को उपलब्ध आदेश में कोर्ट ने कहा है कि शुक्रवार को सुनवाई के दौरान याची समेत केंद्र व राज्य सरकार के अधिवक्ताओं से पूछा गया था कि क्या इस मामले में विपक्षी संख्या एक (राहुल गांधी) को नोटिस जारी करने की आवश्यकता है। आदेश में कहा गया है कि अधिवक्ताओं ने कोर्ट को बताया कि नोटिस जारी करने की कोई आवश्यकता नहीं है, तत्पश्चात ओपन कोर्ट में एफआईआर दर्ज करने का विस्तृत आदेश पारित कर दिया गया। इस आदेश के टाइप होने और उस पर हस्ताक्षर होने के पहले ही न्यायमूर्ति सुभाष विद्यार्थी ने पाया कि इलाहाबाद हाई कोर्ट की पूर्ण पीठ ने वर्ष 2014 में पारित एक निर्णय में कहा है कि एफआईआर दर्ज कराने के मांग वाले प्रार्थना पत्रों के खारिज होने पर पुनरीक्षण याचिका ही पोषणीय है तथा ऐसी याचिका पर प्रस्तावित अभियुक्त को नोटिस भेजा जाना अनिवार्य है।

न्यायालय ने कहा की इस विधिक स्थिति को देखते हुए बिना विपक्षी संख्या एक (राहुल गांधी) को नोटिस से पहले मामले को निर्णित करना उचित नहीं है। न्यायालय ने मामले की अगली सुनवाई के लिए 20 अप्रैल की तिथि नियत की है।उल्लेखनीय है कि कर्नाटक निवासी याची एस. विग्नेश शिशिर की याचिका पर न्यायालय ने शुक्रवार को राहुल गांधी के विरुद्ध कथित दोहरी नागरिकता के मामले में एफआईआर दर्ज कर विवेचना का आदेश ओपन कोर्ट में डिक्टेट किया था। याची ने राहुल गांधी पर भारतीय न्याय संहिता, आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, विदेशी अधिनियम तथा पासपोर्ट अधिनियम के तहत विभिन्न गंभीर आरोप लगाए हैं और मामले की विस्तृत जांच की मांग की है। याची के प्रार्थना पत्र को निचली अदालत खारिज कर चुकी है।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली के सीआर पार्क में लेनदेन के विवाद में पिता-पुत्र का हत्यारा गिरफ्तार, पहले भी हो चुकी थीं झड़पें

दक्षिणी दिल्ली। सीआर पार्क थाना क्षेत्र में शुक्रवार देररात तारा अपार्टमेंट में एक ही परिवार के दो लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। मृतक पिता-पुत्र क्रमशः राकेश सूद व करण सूद की इस वारदात में मौके पर ही मौत हो गई थी। दरअसल, रुपयों के लेनदेन के विवाद में एक युवक ने करण पर धारदार हथियार से हमला कर दिया था। पिता राकेश सूद बचाने आए तो आरोपित उनपर भी ताबड़तोड़ वार करने से पीछे नहीं हटा। इससे पिता-पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, वारदात के बाद आरोपित मौके से फरार हो गया था। पुलिस ने दोनों शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए था। बीएनएस की संबंधित धारा में केस दर्ज कर आरोपित की तलाश में छापेमारी करते हुए तारा अपार्टमेंट्स में ही रहने वाले आरोपी असद को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मृतक करण सूद अपने परिवार के साथ सीआर पार्क के तारा अपार्टमेंट में रहते थे। करण प्रॉपर्टी के कारोबार से जुड़ा हुआ था। यह उसके पिता राकेश सूद का कारोबार है, जिसमें वह मदद करता था। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपित और पीड़ितों के बीच लंबे समय से रुपयों के लेन-देन को लेकर विवाद चल रहा था। शुक्रवार को इसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच कहासुनी हुई, जो देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गई।

नोएडा हिंसा के बाद श्रमिकों के शोषण पर एक्शन: 10 ठेकेदारों के लाइसेंस रद्द, 42 ब्लैकलिस्ट होने की कगार पर

नोएडा। श्रमिकों के हिंसक प्रदर्शन मामले में शुक्रवार को श्रम विभाग ने वेतन व ओवरटाइम भुगतान में अनियमितताएं पाए जाने पर 24 फैक्ट्रियों के 203 ठेकेदारों को नोटिस जारी किए गए थे। इनमें से शनिवार को 10 ठेकेदारों के लाइसेंस निरस्त कर दिए गए हैं। जांच में सामने आया है कि ठेकेदार श्रमिकों को दोगुना दर से ओवरटाइम का भुगतान नहीं कर रहे थे।

42 और ठेकेदारों को नोटिस जारी

पीएफ और ईएसआइसी में भी गड़बड़ी की जा रही थी। वहीं, 42 और ठेकेदारों को लाइसेंस निरस्तीकरण और ब्लैकलिस्ट करने के लिए नोटिस जारी किए गए हैं। श्रम विभाग के अधिकारियों के अनुसार, जिस कंपनियों और फैक्ट्रियों के बाहर प्रदर्शन हुए उनके ठेकेदारों को नोटिस भेजे जा रहे हैं। जांच में ठेकेदारों की कमियां उजागर हो रहीं हैं। यह ठेकेदार श्रमिकों को ओवरटाइम का सामान्य दर से भुगतान कर रहे थे। समय पर वेतन नहीं देने की सबसे ज्यादा शिकायतें सामने आ रहीं हैं। जांच में अब तक 245 ठेकेदारों को लाइसेंस निरस्तीकरण और ब्लैकलिस्ट करने के नोटिस जारी हो चुके हैं। अन्य फैक्ट्रियों और कंपनियों के ठेकेदारों को भी चिह्नित किया जा रहा है। सोमवार तक नोटिस का जवाब नहीं मिलने पर लाइसेंस निरस्तीकरण और ब्लैकलिस्ट करने की कार्रवाई होगी। श्रमिकों के वेतन और उसके भुगतान को लेकर किसी तरह की अनियमितता सामने आती है तो संबंधित कंपनी-फैक्ट्री या ठेकेदार पर सीधे तौर पर कार्रवाई होगी। एक अप्रैल से श्रमिकों का बढ़ा हुआ वेतन मान्य है और इसी दर से भुगतान करना होगा।

गाजियाबाद की महिला से राहुल बनकर शादी और होटल में दुष्कर्म, आदिल की खुली हकीकत, अलीगढ़ में प्रधान समेत पांच हुए गिरफ्तार

अलीगढ़। जीटी रोड पर बोनेर के पास ग्रीन पार्क होटल में गाजियाबाद निवासी महिला के साथ दुष्कर्म, बंधक बनाकर रखने और मारपीट के मामले में पुलिस ने पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। आरोप है कि होटल में साजिश के तहत एक महिला, प्रधान और एक पत्रकार भी इस साजिश में शामिल थे। एसपी सिटी आदित्य बंसल ने बताया कि पीड़िता की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की गई है। पीड़िता ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि फरवरी में उसकी मुलाकात गाजियाबाद में अलीगढ़ निवासी युवक आदिल अहमद से हुई थी, जिसने अपनी पहचान हिंदू युवक राहुल बनकर बताई। उसने दोस्ती के बाद चार अप्रैल को बहला-फुसलाकर अलीगढ़ के बोनेर चौराहे के पास स्थित ग्रीन पार्क होटल में ले आया। वहां कमरे में उसे बंधक बनाकर रखा गया। इस दौरान मुख्य आरोपित और होटल संचालक वीरु ने महिला के तीन वर्षीय बच्चे की हत्या की धमकी देकर उसके साथ जबरन दुष्कर्म किया।

गोंडा में हैंडपंप करोड़ों का घोटाला: 16 ब्लॉकों की 1214 ग्राम पंचायतों में करोड़ों की निकासी, फाइलों में 'जिंदा'- जमीन पर सूखे हैंडपंप

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोंडा, संवाददाता। जनपद में पेयजल व्यवस्था सुधारने के नाम पर हुए खर्च को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। जिले के सभी 16 विकास खंडों की कुल 1214 ग्राम पंचायतों में हैंडपंप रिबोर और मरम्मत के नाम पर करोड़ों रुपये की निकासी की गई, लेकिन जमीनी हकीकत में अधिकांश हैंडपंप खराब पड़े हैं या पानी देना बंद कर चुके हैं। जिले के बभनजोत, बेलसर, छपिया, कर्नलगंज, हलधरमऊ, इटियाथोक, झंझरी, कटराबाजार, मनकापुर, मुजेहना, नवाबगंज, पंडरीकृपाल, परसपुर, रुपईडीह, तरबगंज और वजीरगंज– इन सभी ब्लॉकों में बड़े पैमाने पर भुगतान हुआ है।

ब्लॉकवार ग्राम पंचायतों का आधिकारिक विवरण इस प्रकार है— रुपईडीह - 106, इटियाथोक - 85, झंझरी - 92, बभनजोत - 79, मनकापुर - 92, कटराबाजार - 78, छपिया - 87, परसपुर - 75, वजीरगंज - 75, कर्नलगंज - 74, नवाबगंज - 71, हलधरमऊ - 68, मुजेहना - 62, तरबगंज - 59, पंडरीकृपाल - 57, बेलसर - 54- टोटल 1214 ग्राम पंचायतें इस दायरे में आती हैं।

'फाइलों में काम, जमीन पर सूखा' ग्रामीणों का आरोप है कि हैंडपंप रिबोर और मरम्मत का कार्य सिर्फ कागजों में ही कराया जाता है। कई जगहों पर केवल फोटो अपलोडिंग के आधार पर कार्य पूर्ण दिखाकर भुगतान निकाल लिया जाता है। जबकि वास्तविकता यह है कि अधिकांश गांवों में हैंडपंप या तो खराब पड़े हैं या पानी देना बंद कर चुके हैं।

भ्रष्टाचार का पैटर्न

बिना कार्य कराए ही भुगतान, फोटो अपलोडिंग के सहारे फाइल क्लोज, एक ही हैंडपंप को कई बार मरम्मत दिखाना, फर्जी फर्मों के जरिए बिल पास करना, जांच के नाम पर लीपापोती,

इस पूरे मामले में कई बार जांच के आदेश दिए गए, लेकिन हर बार कार्रवाई के बजाय औपचारिकता निभाकर फाइल बंद कर दी गई। आरोप है कि बड़े स्तर पर जिम्मेदार लोगों को बचाया जाता रहा है।

आधिकारिक बयान इस संबंध में जिला पंचायती राज अधिकारी (DPRO) ने कहा– 'शिकायतों की जांच कराई जायगी। यदि किसी भी स्तर पर अनियमितता पाई जाती है, तो संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।' वहीं मुख्य विकास अधिकारी (CDO) ने बताया– 'सभी ब्लॉकों में कराए गए कार्यों का भौतिक सत्यापन कराया जायगा। दोषियों के खिलाफ रिकवरी और कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।'

ग्रामीणों की मांग

जियो-टैगिंग के साथ भौतिक सत्यापन, फर्जी भुगतान की रिकवरी, दोषियों पर एफआईआर, गोंडा में हैंडपंप के नाम पर हुआ यह कथित घोटाला अब बड़ा जनमुद्दा बन चुका है। जब 1214 ग्राम पंचायतों में करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद लोग पानी के लिए परेशान हों, तो यह साफ संकेत है कि सिस्टम में गहरी मिलीभगत है। अब देखना यह होगा कि प्रशासन इस पर सख्त कार्रवाई करता है या फिर यह मामला भी फाइलों में ही दफन हो जाता है।

दिल्ली को 200 ई बसों की सौगात सीएम रेखा गुप्ता ने दिखाई हरी झंडी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता
संवाददाता बादल हुसैन

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए 200 नई इलेक्ट्रॉनिक बसें सड़कों पर उतारी गई। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने पूर्वी दिल्ली स्थित ईस्ट विनोद नगर बस डिपो से इन बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। दिल्ली में साफ़ सुथरे और आधुनिक सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने की दीशा में ऐ कदम उठाया।इन परियोजनाओं से बस और यात्रियों की सुविधा में सुधार होने की उम्मीद है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि दिल्ली में परिवहन क्षेत्र में लगातार कम हो रहा है और हर महीने नई सुविधाएं शुरू की जा रही है। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार राजधानी के विकास के लिए बजट की कमी नहीं आने देगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का दिल्ली के विकास पर विशेष ध्यान है और राजधानी को देश की सबसे तेज विकसित होने वाली शहरों में शामिल किया जाएगा। उन्होंने भरोसा जताया कि ईन ईवी बसे दिल्ली के हर इलाके तक बेहतर सेवा पहुंचाएगी। परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह ने मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में डीडीसी लगातार मजबूत हो रही है।इस मौके पर दिल्ली सरकार के परिवहन मंत्री पंकज कुमार सिंह संबंधित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी सहित अन्य गणमान्य जन भी उपस्थित थे।

राज्य के भीतर पशुओं का परिवहन अपराध नहीं: इलाहाबाद हाईकोर्ट; गौकशी कानून के दुरुपयोग पर सरकार से जवाब तलब

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने दोहराया है कि उत्तर प्रदेश में गोवंशी पशुओं का परिवहन अपराध की श्रेणी में नहीं आता है। न्यायालय के सामने ऐसे मुकदमों की बाढ़ आ रही, जिसमें लोगों को गोहत्या अधिनियम में फर्जी तरीके से फंसाया जा रहा है। कोर्ट ने प्रमुख सचिव गृह संजय प्रसाद और डीजीपी राजीव कृष्ण से शपथ-पत्र मांगा है कि गोहत्या अधिनियम के दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या किया गया है? सात नवंबर तक शपथ-पत्र नहीं आता है तो दोनों अधिकारी कोर्ट में स्वयं प्रस्तुत होकर उत्तर दें। कोर्ट ने उक्त दोनों शीर्ष अधिकारियों से पूछा है कि क्यों नहीं ऐसे मामलों में सरकार पर भारी जुर्माना लगाया जाए। इसके अतिरिक्त न्यायालय ने गोवंशी पशुओं के मामलों में भीड़ हिंसा व कुछ लोगों-संगठनों की अति सक्रियता पर लगाम लगाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में भी उत्तर मांगा है।

यह आदेश जस्टिस अब्दुल मोईन व जस्टिस एके चौधरी की पीठ ने प्रतापगढ़ के वाहन मालिक राहुल यादव की याचिका पर पारित किया। कोर्ट ने कहा कि इन दिनों उसके सामने गोहत्या अधिनियम में फर्जी फंसाए जाने के बहुत मामले आ रहे हैं, जिनमें याची का काफी पैसा और कोर्ट का बहुमूल्य समय बर्बाद हो जाता है। कोर्ट ने पुराने फैसलों का जिक्र करते हुए कहा कि प्रदेश में गोवंशी पशुओं का मात्र परिवहन करना अपराध नहीं है।

कोर्ट ने याचिका पर सुनवाई करते हुए पाया कि याची को पुलिस केवल इसलिए परेशान कर रही थी, क्योंकि गाड़ी उसके नाम पंजीकृत थी। गाड़ी उसका ड्राइवर चला रहा था और उस पर नौ गोवंशी पशु लादकर अमेठी से प्रतापगढ़ ले जाए जा रहे थे। कोर्ट ने यह भी पाया कि सभी नौ गोवंशी पशुओं को कोई चोट नहीं थी और ना ही उनका वध ही हुआ था, ऐसे में याची को गोहत्या अधिनियम में फंसना गलत है। कोर्ट ने पुलिस को आदेश दिया कि याची को प्रताड़ित ना किया जाए।

हालांकि, कोर्ट ने केस की विवेचना नहीं रोकी है और याची को पुलिस का सहयोग करने को कहा है। कोर्ट ने प्रमुख सचिव गृह और डीजीपी को यह बताने के लिए कहा है कि गोवंशी पशुओं के मामलों में सतही प्राथमिकियां क्यों दर्ज की जा रही हैं और ऐसा हो रहा है तो सूचनाकर्ता और संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ क्या कार्रवाई की जा रही है?

दिल्ली के सुंदर नगरी में बिजली गिरने से घर में लगी आग, लाखों का नुकसान; पूरे इलाके में दहशत

पूर्वी दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के नंद नगरी थाना क्षेत्र के सुंदर नगरी स्थित श्व-57 ब्लॉक में देर रात आकाशीय बिजली गिरने का मामला सामने आया है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, बिजली मकान की छत पर गिरी और रोशनदान के रास्ते घर के अंदर करंट फैल गया। घटना के दौरान घर में रखी वॉशिंग मशीन, सिंटेक्स पानी का टैंक और कपड़े जलकर खाक हो गए। इस घटना से पूरे इलाके में दहशत फैल गई है।

हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई

सूचना मिलते ही आग बुझाने के लिए दमकल विभाग की दो गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। राहत की बात यह रही कि इस हादसे में कोई जनहानि नहीं हुई, हालांकि घर के अंदर का सामान काफी हद तक क्षतिग्रस्त हो गया।

अचानक बिजली गिरने की आवाज सुनाई दी

स्थानीय लोगों के मुताबिक तेज गर्जना के साथ अचानक बिजली गिरने की आवाज सुनाई दी, जिसके बाद आसपास के लोग एहतियातन घरों से बाहर निकल आए। दमकल अधिकारियों का कहना है कि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया, वरना नुकसान और बढ़ सकता था।

असम के दुल्लभछड़ा-शिलचर मार्ग पर इलेक्ट्रिक ट्रेन चलाने की मांग तेज

● प्रधानमंत्री और रेल मंत्री से हस्तक्षेप की अपील।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

श्रीभूमि: वर्तमान सरकार 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' इस नारे के साथ देशभर में विकास कार्य तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन असम के बराक घाटी क्षेत्र में विकास की गति अपेक्षाकृत धीमी होने का आरोप स्थानीय लोगों द्वारा लगाया जा रहा है। उत्तर-पूर्व भारत में रेलवे ढांचे के आधुनिकीकरण और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के उद्देश्य से Northeast Frontier Railway द्वारा बड़े पैमाने पर विद्युतीकरण (Electrification) का कार्य किया जा रहा है।

आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, इस क्षेत्र के अधिकांश रेल मार्ग अब विद्युतीकरण के दायरे में आ चुके हैं। इसके अलावा बदरपुर-शिलचर और बराईग्राम-दुल्लभछड़ा जैसे कई सेक्शनों में विद्युतीकरण कार्य अंतिम चरण में है। वहीं त्रिपुरा और मेघालय जैसे राज्यों में इलेक्ट्रिक ट्रेन सेवाएँ शुरू करने की दिशा में तेजी से काम चल रहा है। सूत्रों के अनुसार, कुछ रूटों पर इलेक्ट्रिक ट्रेनों का ट्रायल भी शुरू किया जा चुका है, जिससे यह स्पष्ट है कि उत्तर-पूर्व रेलवे तेजी से ग्रीन ट्रांसपोर्ट सिस्टम की ओर बढ़ रहा है। स्थानीय लोगों की प्रमुख मांग इसके बावजूद शिलचर-दुल्लभछड़ा रेलवे मार्ग को लेकर सवाल उठ रहे हैं। लगभग 100 किलोमीटर लंबे इस मार्ग पर अभी भी मुख्य रूप से डीजल इंजन वाली ट्रेनें चलती हैं, जिससे यात्रा समय अधिक और सेवा अनियमित रहती है।

यात्रियों के अनुसार यात्रा में लगभग 4 घंटे 45 मिनट का समय लगता है बरसात और बाढ़ के दौरान सेवा बाधित हो जाती है. नियमित और तेज रेल सेवा की कमी है. क्षेत्र के लोगों की मांग है कि इस मार्ग पर जल्द से जल्द इलेक्ट्रिक ट्रेन सेवा शुरू की जाए। शीघ्र इलेक्ट्रिक ट्रेन संचालन यात्रा समय में कमी पर्यावरण अनुकूल रेल सेवा का विस्तार स्थानीय लोगों का कहना है कि इलेक्ट्रिक ट्रेन शुरू होने से न केवल यात्रा समय में उल्लेखनीय बचत होगी, बल्कि डीजल पर निर्भरता भी घटेगी, जिससे ईंधन खर्च और प्रदूषण दोनों में कमी आएगी। साथ ही छात्रों, नौकरीपेशा लोगों और व्यापारियों को बड़ी राहत मिलेगी। विभिन्न जिला और क्षेत्र के लोगों ने इस मुद्दे पर भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का ध्यान आकर्षित किया है। शिलचर-दुल्लभछड़ा मार्ग पर इलेक्ट्रिक ट्रेन सेवा की मांग अब केवल सुविधा का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह क्षेत्रीय विकास और जनता की दैनिक जरूरतों से जुड़ा एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया है। 'लोगों का मानना है कि सरकार इस विषय पर जनता के हित को ध्यान में रखते हुए अवश्य कदम उठाएगी।

शिक्षा विभाग का करोड़पति चपरासी, तीन पत्नियां, तीनों के अकाउंट में करोंडो रुपए, 5.28 करोड़ का किया घोटाला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

यूपी के पीलीभीत जिले में शिक्षा विभाग (डीआईओएस कार्यालय) में तैनात एक साधारण चपरासी ने पूरे प्रशासन को हिला कर रख दिया है। इल्हाम उर रहमान शम्सी नाम का यह चपरासी करोड़ों रुपये का मालिक निकला। जांच में पता चला कि उसकी तीन पत्नियां हैं और उनमें से दो के बैंक खातों में ही 59 लाख रुपये की एफडी जमा हैं। कुल 53 संदिग्ध बैंक खातों से 5.28 करोड़ रुपये फ्रीज कर दिए गए हैं। पुलिस का आरोप है कि उसने सरकारी खजाने से करोड़ों का गबन किया।

जांच के अनुसार, इल्हाम उर रहमान शम्सी बीसलपुर के जनता टेक्निकल इंटर कॉलेज में चपरासी के पद पर तैनात था। उसने पिछले करीब दो सालों में शिक्षा विभाग से जुड़े फर्जी कर्मचारियों और पेंशनरों के नाम पर सरकारी धन ट्रांसफर करवाया। कई खाताधारकों को फर्जी तरीके से 'शिक्षा विभाग के कर्मचारी' दिखाकर उनके खातों में पैसे भेजे गए। जांच में सबसे चौंकाने वाला खुलासा यह हुआ कि इल्हाम की तीन पत्नियां हैं, जो अलग-अलग जिलों में रहती हैं, अर्शी खातून इल्हाम की पहली पत्नी वह पीलीभीत में रहती हैं। इल्हाम ने फर्जीवाड़े से उसे सरकारी शिक्षिका (टीचर) बना दिया था। उसके खाते में वेतन भिजवाया जाता था। इस मामले में अर्शी खातून जेल में है।

अजरा इल्हाम की दूसरी पत्नी है, वह खुर्जा, बुलंदशहर में रहती है, उनके खाते में 25 लाख रुपये की एफडी। तीसरी पत्नी लुबना संभल में रहती है। उनके खाते में लेन-देन की जांच जारी है। इसके अलावा एक रिश्तेदार महिला के खाते में भी एफडी थी, जिसे भी फ्रीज कर दिया गया। कुल मिलाकर दो पत्नियों और रिश्तेदार के खातों में 59 लाख रुपये की एफडी जमा पाई गई।

पुलिस और शिक्षा विभाग की जांच में सामने आया कि इल्हाम ने 53 बैंक खातों का इस्तेमाल कर 5.28 करोड़ रुपये से ज्यादा की राशि इधर-उधर की। कुछ रकम जेएचएम इंफ्रा होम प्राइवेट लिमिटेड (बरेली) और ओरिका होम्स जैसी कंपनियों के खातों में ट्रांसफर की गई। पुलिस ने इन कंपनियों के संचालकों को भी नोटिस जारी कर दिए हैं। एक बैंक मैनेजर की सूचना पर यह पूरा घोटाला सामने आया। स्पेशल पुलिस (पीलीभीत) सुकीर्ति माधव ने मामले की पुष्टि की। फिलहाल इल्हाम शम्सी और उसकी पत्नी अर्शी खातून पर केस दर्ज है। पुलिस रोजाना इन खातों की निगरानी कर रही है ताकि कोई और लेन-देन न हो सके।

इंडिगो ने यात्रियों के लिए जारी की एडवाइजरी, दिल्ली में खराब मौसम के कारण उड़ानें प्रभावित

नई दिल्ली। इंडिगो ने राजधानी दिल्ली में खराब मौसम की वजह से यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। इंडिगो की ओर से ऑफिशियल एक्स अकाउंट पर कहा गया कि दिल्ली में खराब मौसम के कारण उड़ानों का संचालन प्रभावित हो रहा है। इंडिगो की ओर से बताया गया कि हमारी टीमें इस बारीकी से नजर रख रही हैं। उनका कहना है कि मौसम ठीक होते ही उड़ानों का पहले की तरह समय से संचालन किया जाएगा।

यात्रियों को दी सलाह

इंडिगो की ओर से कहा गया कि हम आपसे अपील करते हैं कि आप हमारी वेबसाइट या ऐप के जरिए अपनी फ्लाइट के स्टेटस के बारे में अपडेटेड रहें। कृपया भरोसा रखें कि हमारी टीमें हर कदम पर आपकी मदद करने और पूरा सपोर्ट देने के लिए यहां हैं। हम साफ आसमान और अपने रेगुलर शेड्यूल पर जल्दी लौटने की उम्मीद करते हैं।

ऑरेंज अलर्ट जारी किया

आईएमडी ने पूरे दिल्ली-एनसीआर के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया था। विभाग ने कहा कि पूरे दिल्ली और एनसीआर में हल्की से मध्यम बारिश, हल्की गरज-चमक और बिजली गिरने के साथ 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने की बहुत संभावना है। निवासियों को घर के अंदर रहने और खुले क्षेत्रों से दूर रहने की सलाह दी गई।

मुस्लिम उत्तराधिकार कानून पर सुप्रीम कोर्ट सख्त: महिलाओं के साथ भेदभाव के आरोपों पर केंद्र को नोटिस

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के उत्तराधिकार अधिकारों से जुड़े एक महत्वपूर्ण मामले में सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया है। यह मामला 1937 के मुस्लिम पर्सनल लॉ (शरीयत) एप्लीकेशन अधिनियम के उन प्रावधानों को चुनौती देता है, जिन्हें याचिकाकर्ताओं ने महिलाओं के प्रति भेदभावपूर्ण बताया है। अदालत के इस कदम को देश में लैंगिक समानता और व्यक्तिगत कानूनों की समीक्षा के संदर्भ में एक अहम मोड़ माना जा रहा है।

यह जनहित याचिका लखनऊ की अधिवक्ता पौलोमी पाविनी शुक्ला और आयशा जावेद द्वारा 'न्याया नारी फाउंडेशन' की ओर से दायर की गई है। याचिका में कहा गया है कि मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत उत्तराधिकार और वसीयत से जुड़े नियम महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार नहीं करते और उन्हें पुरुषों की तुलना में कम अधिकार प्रदान करते हैं। याचिकाकर्ताओं ने यह भी तर्क दिया कि यह प्रावधान भारतीय संविधान के मूल अधिकारों, विशेष रूप से समानता के अधिकार, का उल्लंघन करते हैं।

इस मामले की सुनवाई भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल पंचोली की पीठ ने की। सुनवाई के दौरान पीठ ने याचिका में उठाए गए मुद्दों को गंभीरता से लेते हुए केंद्र सरकार से जवाब तलब किया और नोटिस जारी करने का आदेश दिया। यह याचिका संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत दायर की गई है, जो नागरिकों को सीधे सुप्रीम कोर्ट में अपने मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए याचिका दायर करने का अधिकार देता है।

वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण और अधिवक्ता निहाल अहमद ने याचिकाकर्ताओं की ओर से दलीलें पेश करते हुए कहा कि उत्तराधिकार और वसीयत से जुड़े ये प्रावधान इस्लाम की 'आवश्यक धार्मिक प्रथाओं' का हिस्सा नहीं हैं। इसलिए इन्हें संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर संरक्षण नहीं दिया जा सकता। प्रशांत भूषण ने अदालत में कहा कि 'यह पूरी तरह असंगत है कि महिलाओं को उनके पुरुष समकक्षों की तुलना में आधा या उससे भी कम हिस्सा दिया जाए। यह स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण है और इसे किसी भी रूप में उचित नहीं ठहराया जा सकता।'

याचिका में यह भी उल्लेख किया गया है कि मुस्लिम पर्सनल लॉ के तहत कोई भी व्यक्ति अपनी संपत्ति का केवल एक-तिहाई (1/3) हिस्सा ही वसीयत कर सकता है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति अपनी पूरी संपत्ति पर स्वतंत्र रूप से निर्णय नहीं ले सकता। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि यह प्रावधान व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति के अधिकारों को सीमित करता है, जो आधुनिक संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप नहीं है। यह मामला केवल कानूनी विवाद नहीं, बल्कि समाज में लैंगिक समानता के व्यापक प्रश्न से भी जुड़ा हुआ है। लंबे समय से यह बहस चल रही है कि क्या व्यक्तिगत कानूनों को संविधान के मूल सिद्धांतों के अनुरूप बनाया जाना चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि सुप्रीम कोर्ट इस मामले में हस्तक्षेप करता है, तो यह महिलाओं के अधिकारों को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकता है।

अब इस मामले में केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया बेहद महत्वपूर्ण मानी जा रही है। सरकार को यह स्पष्ट करना होगा कि वह व्यक्तिगत कानूनों और संवैधानिक मूल्यों के बीच संतुलन कैसे बनाएगी। केंद्र का पक्ष आने के बाद ही अदालत इस मामले में आगे की सुनवाई और संभावित निर्णय की दिशा तय करेगी। सुप्रीम कोर्ट के इस नोटिस के बाद देशभर में इस मुद्दे पर बहस तेज हो गई है। एक ओर जहां महिला अधिकारों के समर्थक इसे सकारात्मक कदम मान रहे हैं, वहीं कुछ वर्ग इसे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में देख रहे हैं। इस मामले ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या व्यक्तिगत कानूनों में सुधार की आवश्यकता है और यदि हां, तो किस हद तक।

महाविद्यालय में 'महिला सशक्तिकरण एवं महिला हेल्पलाइन नंबर' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता आयोजित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नैनी प्रयागराज। हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश की अध्यक्षता में दिनांक 18 अप्रैल 2026 को नारी शक्ति वंदन कार्यक्रम एवं मिशन शक्ति फेज-5 के द्वितीय चरण के अंतर्गत 'महिला सशक्तिकरण एवं महिला हेल्पलाइन नंबर' विषय पर रंगोली प्रतियोगिता का भव्य आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य छात्राओं में जागरूकता उत्पन्न करना, उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करना तथा महिला सुरक्षा से संबंधित हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी को जन-जन तक पहुँचाना था। प्रतियोगिता में एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राएं मंतशा, कु. साधना, प्रिया प्रजापति तथा एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर की निकिता सिंह, कुमारी अनुपम एवं प्रियंका यादव ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया और अपनी रंगोलियों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण, आत्मरक्षा, शिक्षा के महत्व तथा महिला हेल्पलाइन नंबरों की उपयोगिता को अत्यंत सुंदर एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया, जिससे उपस्थित सभी लोग प्रभावित हुए। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्रो. मंजूलता, प्रो. नीतू सिंह, प्रो. सुवर्णा सरकार, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. अर्चना राय, डॉ. निरुपमा, डॉ. सुचित्रा, डॉ. राजेश कुमार तथा श्री ऋषि प्रताप सिंह सहित अन्य प्राध्यापक एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे, वहीं डीपीओ कार्यालय प्रयागराज से श्रीमती नीतू शुक्ला की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा को और बढ़ाया।

कार्यक्रम का सफल संचालन मिशन शक्ति प्रभारी डॉ. हेमलता के मार्गदर्शन में किया गया, जिन्होंने छात्राओं को महिला अधिकारों, सुरक्षा उपायों और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया। अंत में डॉ. हेमलता ने सभी अतिथियों, प्राध्यापकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया तथा इस कार्यक्रम को छात्राओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी बताया।